ॐ

निरन्जन भजनामृत सरिता

स्वामी निरंजन

निरन्जन भजनामृत सरिता

स्वामी निरंजन

प्रकाशक : **निरंजन बुक् ट्रष्ट**
द्वितीय मुद्रण : **श्रीपंचमी,२०१४**
मुद्रण एवं अलंकरण : **दिव्य मुद्रणी,** भुवनेश्वर - २ (उड़िसा)
प्रच्छद : बिभु

मूल्य : **₹** 60 /-

सुचीपत्र

श्री सद्गुरु परमात्मने नमः

–मंगलाचरण–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरुदेव साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानान्जन शलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
आत्मज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

ध्यान मूलं गुरोर्मुर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।।

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम् ।
नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

मन्नाथः श्री जगन्नाथ मद्गुरुं श्री जगद्गुरुम् ।
मदात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

सर्व श्रुति शिरोरत्न विराजित पदाम्बुजः ।
वेदान्ताम्बुज सूर्यो यः तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ।
नित्य बोधं चिदानन्दं गुरु ब्रह्म नमाम्यहम् ।।

नित्यानन्दं व्यापि यत् सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किञ्चित् सचराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

ज्ञानशक्ति समारूढ़ं तत्त्वमाला विभूषितः ।
भूक्ति मुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अनेक जन्म संप्राप्त कर्म बन्ध विदाहिने ।
आत्मज्ञान प्रदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सार सम्पदः ।
गुरुपादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मुर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षी भूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सदगुरु त्वं नमामि ।।

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

।। इति गुरु स्तुति सम्पूर्णम् ।।

शान्तिः पाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ॐ सहनाभवतु । सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विना अवधीतमस्तु ।
मा विद्वेषावहै ।

मातृ देवो भव । पितृ देवो भव ।
आचार्य देवो भव । अतिथि देवो भव ।
सर्वान् देवो भव ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री सद्गुरुजी की आरती

ओम जय सद्गुरु स्वामी,
प्रभु जय सद्गुरु स्वामी ।।0।।

मुमुक्षु जनों के संशय,
तत्क्षण दूर करे ...... ओम

शरण पड़े को मुक्ति दिलावे,
भव भ्रमण मिटे उनका ।
मल विक्षेप को दूर हटावे,
अज्ञान कटे मन का...... ओम

तुम ही सर्वम् देव हमारे,
चाह नहीं है किसकी ।
तुम बिन और न दूजा,
पुजा करुँ में जिसकी..... ओम

राग द्वेष मन से हटाया,
अरु जन्म मरण फेरा ।
सत्यासत्य विवेक करा,
अज्ञान हरा मेरा...... ओम
निज तन अहं बुद्धि मिटायी,
भये सचराचर वासी ।
तुम करुणा के सागर,
प्रभु आनन्दघन रासी ...... ओम

दया प्रेम अरु समता सिखायी,
प्रति सन्मुख जो मेरे ।
जो उपकार किया प्रभु मुझपर,
किस विधि कहुँ तुमरे ..... ओम

तन मन धन से सेवा करुँ
मन लाऊँ नहीं कामा ।
शान्ता गुरु मुख आरत हो,
पाओ आनन्द धामा ...... ओम

जय जयकार हुई है नगर में सत्गुरु देव पधारे हैं ।
हरी ॐ... हरी ॐ.... हरी ॐ....

सत्गुरु स्वामी बनकर धोविआ
धोवि घाट लगाएंगे ।
जनम जनम की मैली चादरिया
ज्ञान साबुन से धुलायेंगें ।१।
हरी ॐ... हरी ॐ....

सत्गुरु स्वामी बन रंग रेजवा
चादर रंगने आये है ।
विवेक वैराग्य की शुद्ध चादर को
श्रवण मनन रंग लाऐंगे ।२।
हरी ॐ... हरी ॐ....

सत्गुरु स्वामी बनकर जोहरी
आत्म रतन धन लाएहैं ।
बह्मात्म्यैक्य की दिव्य मालाऐं
मुमुक्षुओं को पहनाएगें ।३।
हरी ॐ... हरी ॐ....

सत्गुरु स्वामी बनकर वैद्यवा
औषध देने आये हैं
असत् जड़ दुःख की हुइ विमारी
सच्चिदानन्द से मिटाऐंगे ।४।
हरी ॐ... हरी ॐ....

सत्गुरु स्वामी बनकर जादुगर
ज्ञान की जादु दीखाएगें
अज्ञानी अन्धे जीवों के
ज्ञान चक्षु खुलवाएगें ।५।
हरी ॐ... हरी ॐ....
सत्गुरु स्वामी बनकर प्रेमी
प्रेम जगाने आये हैं ।
जनम जनम के प्यासे मन को
आत्म तृप्ति कराएगें ।६।
हरी ॐ... हरी ॐ....
सत्गुरु स्वामी बनकर ज्ञानी
ज्ञान जगाने आये हैं
जनम जनम के बन्धन से
कैवल्य मुक्ति दिलाएगें ।७।
हरी ॐ... हरी ॐ....
सत्गुरु स्वामी बन केवटिआ
पार कराने आये हैं ।
ज्ञान नौका पर हमें बिठाकर
भव से पार लगाएगें ।८।
हरी ॐ... हरी ॐ....

गुरु देव मेरे दाता हम को ऐसा वर दो ।
सेवा सुमिरन सत्संग मेरी झोली में भर दो ॥0॥

निंदा जो हमारी करे, उनका गुणगान करें ।
नफरत जो करे हमसे, उन से भी प्यार करें ॥
समता भाव जगाकर प्रभु प्रेम का रस भर दो
...सेवा

करते जो हमारा बुरा उनका उपकार करें ।
दुःखियों के दुःखों को तन धन से दूर करें ॥
काम, क्रोध शक्ति को प्रभु ब्रह्म के संग करदो
...सेवा

श्रवण मनन करा कर मेरा सोहम् भाव जगाओ ।
शमः दमः श्रद्धा को मेरे जीवन में लाओ ॥
दान दया अरु सेवा प्रभु करने का वर दो
...सेवा

मेरे मन मन्दिर में प्रभु एक साक्षी भाव रहे ।
जिस ओर भी मैं देखूँ एक ब्रह्म ही दिखता रहे ॥
यह अरज मेरी दाता गुरु देव पूरी कर दो
...सेवा

सुहाना ये दिन और ये पावन त्योहार ।
गुरु पूजा करलो हो आनन्द अपार ।।

गुरु पूजा की रीत तो जानो,
मन दीपक में श्रद्धा घी डालो ।।
अहं की बाती जला, समर्पण भाव जगा
गुरु को ब्रह्म निहार । सुहाना..

जन्मों जन्मों के पुण्य खिले हैं,
निरन्जन देव जैसे सद्गुरु मिले हैं ।
जो भी चरणों में आये, वे जीवनमुक्ति पाये ।
मिटे भव दुःख अपार ।सुहाना..

कब तलक जन्म लेते रहोगे ।
जन्म ले लेकर मरते रहोगे ।।
पाया मानव जन्म, करलो जीवन सफल
खुल जावे मुक्ति का द्वार । सुहाना..

गुरु की पूजा तब हि हुई जानो ।
जिस दिन तुम अपने को पहचानो ।।
समता भाव आये, ब्रह्मानन्द पाये
हो आनन्द अपार । सुहाना..

आये है मेरे गुरुवर, मेरा स्वरूप बताने ।
अज्ञान का अन्धेरा, मन का मेरा मिटाने ।।

आत्म जिज्ञासा होना, महापुण्य रूप जानो ।
ज्ञानी गुरु का मिलना, प्रभु कृपा रूप मानो ।
सब देश काल रूप में, एक ब्रह्म भाव जगाने ।
अब भेद को मिटाकर, सोऽहम् भाव सिखाने ।
आये है मेरे गुरुवर, मेरा स्वरूप बताने ।१।

ये विष्णु और शंकर, गुरु का ही रूप मानो ।
निराकार ब्रह्म का ही गुरु साकार रूप जानो ।
निरंजन शरण में लेकर, नर से नारायण बनाने ।
कर्ताभाव से उठकर, साक्षी भाव में बिठाने ।।
आये है मेरे गुरुवर, मेरा स्वरूप बताने ।।२।।

आये है शरण तेरी
गुरुदेव कृपा करदो
इस दीन दुःखी मन में
आनन्द सुधा भरदो ।।0 ।।

दुनिया से हार करके
अब द्वार तेरे आया ।
श्रद्धा के सुमन चुनके
सदभाव से मैं लाया ।
करुणा का हाथ सर पे
हे नाथ मेरे रख दो ।।१ ।।

अनजानी मंजिल है
चहूदिशी अन्धियारा है ।
करुणा निधान अब तो
बस तेरा सहारा है ।
मेरे मन विणा में प्रभु
भक्ति का स्वर भर दो ।।२ ।।

कीसि भाँति करु पूजा
कोई विधी नहीं जानु ।
तेरे अनुपम रूप भगवन
किसी तरह से मैं जानु ।
इसी दास अकिंचन को
प्रभु भव से मुक्त कर दो ।।३ ।।

श्वाँस श्वाँस में तेरा नाम ।
गुरुवर तुमको मेरा प्रणाम ।।

हर क्षण होवे तुम्हारा ध्यान ।
मन में गुंजे तुम्हारा नाम ।।

शिष्य पुकारे बारम्बार ।
आकर प्रभो करो उद्धार ।।

शरण में जो आवे भगवान ।
उनका हो जावे कल्याण ।।

ब्रह्मा विष्णु शंकर से महान ।
वेद तुम्हारा करे बखान ।।

जो सर्व देहो में रहते राम ।
निरन्जन गुरु उसी का नाम ।।

गुरु ब्रह्म रूप जानो, निज आत्म रूप मानो ।
सद्गुरु से बढ़कर न, दूसरा जहान में ।।

सद्गुरु ही तीर्थराज, मुक्ति प्रदायक जानो ।
धन मन समर्पण करके, निज को दे दान में ।।

साधन सम्पन्न होकर, सद्गुरु की शरण लीजे ।
मल, विक्षेप दूर कीजे, सद्गुरु के ध्यान में ।।

ज्ञान को सिखावे गुरु, भ्रान्ति को छुड़ावे गुरु ।
भय को मिटावे गुरु, ला आत्म ज्ञान में ।।

यह श्रुति वेद कहता, गुरु बिना ज्ञान कैसा ।
ज्ञान बिना मुक्ति नाहिं, कैसे पावे ध्यान में ।।

आत्म भाव दृढ़ कीजे, देह भाव त्याग दीजे ।
कर्ता भाव छोड़ दीजे, साक्षी ब्रह्म ज्ञान में ।।

गुरुजी मेरे अवगुण चित्त न धरो,
समदर्शी है नाम तिहारो,
अपने पनही करो ।

एक लोहा पूजा में राखत
एक घर बधिक परो ।
यह दुविधा पारस नहीं जानत,
कंचन करत खरो ।। गुरुजी..।।

एक नदिया एक नाल कहावत
मैलो नीर भरो ।
जब मिलके दोउ एक बरन भये,
सुरसरि नाम परो ।। गुरुजी..।।

एक जीव एक ईश कहावत,
गुरु शिष्य झगरो ।
अबकि बेर मोहि पार उतारो
गुरुजी मैं शरण परो ।। गुरुजी..।।

निरंजन प्रभु की वाणी, तू सुनले रे नादान ।
सारे बन्धन छूटे तेरा, हो जावे कल्याण ।।

गुरु बिन भवसे नहीं तर पावे, चाहे ब्रह्मा सम हो जावे ।
यह वेदों का निर्णय तुम लेना जल्दीमान ।।
सारे बन्धन छूटे...

ब्रह्म रूप गुरु देव को जानो, मानुष रूप तुम भूल न मानो ।
गुरु को आतम लखते, नहीं पड़े चौरासी खान ।।
सारे बन्धन छूटे...

गुरु मानव सम जो जन लखते, जाय नरक में फिरफिर मरके ।
गुरु बिन न कोई, है मुक्ति दाता महान ।।
सारे बन्धन छूटे...

गूढ़ तत्त्व नहीं संत छिपाते, आरत अधिकारी जब वे पाते ।
ज्ञान का अंजन देकर, सब दूर करे अज्ञान ।।
सारे बन्धन छूटे...

गुरु के वचन में श्रद्धा जगालो, और साधन से मनको हटालो ।
मन को वश में करके, तू करले अपना ज्ञान ।।
सारे बन्धन छूटे...

आतम अनुभव परम सुख जानो, और कर्म को दुःख रूप मानो ।
द्रष्टा साक्षी शिवोऽहम्, यह निश्चय से निर्वाण ।।
सारे बन्धन छूटे...

तुम्ही मेरे सतघन, तुम्ही मेरे चितघन ।
तुम्हीं आनन्द मेरे, नित्य निरंजन ॥०॥

तुम्हीं मेरे भगवन, तुम्हीं मेरी पूजा ।
जपतप तीरथ मन्दिर, दिखे नहीं दूजा ॥
तुम्हीं पिता माता बन्धु, सखा सेवक मेरे ।
तुम्हीं मेरे सद्गुरु, स्वामी प्यारे प्यारे ॥१॥

ज्ञान बिना है क्या सार इस जीवन में,
ज्ञान ही मुक्ति दाता, कहा सब वेदन में ।
तुम्ही मेरे जीवन नैया, तुम्हीं हो खिवैया,
देरक आत्मज्ञान, परम धाम पहुँचैया ॥२॥

जो अज्ञानी अन्धें है, तुम्हें वे क्या जाने,
देख तुम्हें वे सब, एक इन्सान माने ।
मगर जिसने जाना है, स्वरूप तुम्हारा,
उनके लिये बस तुम, हो एक सहारा ॥३॥

जो अज्ञानी जन तुम्हारी, निंदा कर रहे हैं,
वो संसार सागर बीच, डूब मर रहे हैं ।
निरंजन आनन्द सागर, प्रशांत दिख रहे हैं,
तरंग वत भक्त सबहि, मस्त हो रहे हैं ॥४॥

सद्गुरु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।
निरंजन प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।०।।

झूठी ममता से करके किनारा,
लेकर निरंजन प्रभु का सहारा ।
हुआ उसकी रजा में रजामंद है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।१।।

जिसकी करनी में कोमल सी चहक है,
ओ जिसकी कथनी में फूलोंसी महक है ।
प्रेम नम्रता की जिसमें सुगन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।२।।

निंदा चुगली न जिसको सुहावे,
बुरी संगत की रंगत न भावे ।
वो सत्संग ही जिसको पसन्द है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।३।।

दीन दुखियों के दुःख जो बटावे,
बनके सेवक भला सबका चाहे ।
ओ नहीं जिसमें घमण्ड और पाखण्ड है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।।४।।

गुरु चरण में रहना प्यारे,
गुरु चरण में रहना रे ।
हरि गुरु संत एक रूप हैं,
यह निश्चय करलेना रे ।।१।।

हरि गुरु संत चरण की सेवा,
करके शासन सहना रे ।
तन मन धन कुरबान करीके,
शीश समर्पि देना रे ।।२।।

शीतल शांत सदा समदर्शी,
अरु अनुभव के ऐना रे ।
भेद भरम के भय को भांगी,
कहे अभेद के बैना रे ।।३।।

जीव भाव को जड़ से काटी
कर ब्रह्म चिन्तन चैना रे ।
दास गरीब संशय-सब त्यागी,
अहं ब्रह्म मुख कहना रे ।।४।।

यह दिल है अमानत सतगुरुकी,
दर दर पर झुकाया नहीं जाता ।।0 ।।

गुरुजी किये वचन निभावेंगे,
हम नदिया तैर के आवेंगे ।
हम अपने गुरु को मनावेंगे,
अब जगत मनाया नहीं जाता ।।१।।

अब दुनिया से हमें डर कैसा,
हमें सद्गुरु छोड के दर कैसा ।
हमने गुरु चरणों में किया डेरा,
जो कदम बढाया नहीं हटना ।।२।।

अब दुनिया से उपराम हुए,
हम गुरु चरणों के परवाने हुए ।
हम गुरु वचनों के दिवाने हुए,
अमृत छोड़ के बिष पियानहीं जाता ।।३।।

हम दुनियाँ दारी से निराश हुए,
हम सद्गुरु बिना उदास हुए ।
गुरुदेव के प्रेम में मगन हुए,
हमसे प्यार छुपाया नहीं जाता ...यह दिल

शरण में सतगुरु प्यारे की,
जो भी प्राणी–आएंगे ।
जन्म मरण के बन्धन से,
वह मुक्त हो जायेगें ।।0 ।।

पांच चोर हरि ने देकर
जग में सबको भिजवाया है ।
अपनी माया की रिम झिम में,
खुब हमें भरमाया है ।।
नर तन पाकर गुरु मुख से,
एक सच्चा लाभ कमायेगें ।।१ ।।...जन्म

मन मुखों की बातों में आकर,
नाहक खाता जोश है तू ।
मालिक जाने तेरे दिलकी,
कि है कितने होश में तू ।
तन मन धन कुर्बान करे जो,
सतगुरु को वेही पायेंगे ।।२ ।।...जन्म

राजी रहे तू गुरु की रजापे,
तूझे और कोई भाये ना ।
ध्यान रहे तेरा गुरु चरणों में,
कहीं अटक तू जाये ना ।।
निश्चय ही फिर भवसे नैया,
सतगुरु पार लगायेंगे ।।३ ।।...जन्म

सतगुरु पर बलिहारी जाऊँ
सतगुरु पर बलिहारी रे ।।0।।

जिस ठाकुर के दर्शन कारण,
दुनिया भटके सारी रे, ।
सो ठाकुर गुरुदेव बताया,
अपने घट मझारी रे ।।१।।

मन बुद्धि जाने नाहीं जाके,
वेद पावे नहीं पारी रे ।
घट घट माहि लखाया सतगुरु,
करने ज्ञान उज्यारी रे ।।२।।

बहुत जन्म के शुभ कर्मां से,
मिले मनुष्य अवतारी रे ।
कहें 'निरंजन' गुरु शरण जा,
लेवो जन्म सुधारि रे ।।३।।

मुझे चरणों से अपने,
गुरु जुदा नहीं करना ।
सदा हजुरी में रखना,
बस यही दया करना ।।

रहू पास में हरदम,
मेरी यही तमन्ना है।
कि दूर रह कर जो जीना है,
वह भी तो मरना है ।।
मेहरबानी की नजर,
इसपर सदा करना .... सदा

जो भूल जाऊँ कि,
है मैं भूलन हार ।
न देखना मेरी गल्ती को,
कि तू है बखशन हार ।।
बस अपनी रहमतो को,
याद कर लिया करना ... सदा

जब तलक ये जनम रहे,
ये रहे तेरी खादिम।
ये मेहरबानी का सिलसिला
रहे युँही कायम ।।
इसे कैद से अपनी,
गुरु नहीं रिहा करना... सदा

चाहे सुख दो चाहे दुःख दो
हमें तेरा सब कुछ मन्जुर है
मन मीत मेरे गांऊ मैं गीत तेरे... हमें तेरा

सच कर मानु तेरा कहना,
तेरे आगे करूँ कभी न माना..मन

राजी रहूँ प्रभु रजा पे तेरी,
लगा के अपनी जान की बाजी..मन

तुम अपनाओ चाहे ठोकर मारो,
फिर भी समझू कृपा है तेरी...मन

तख्त बिठाओ प्रभु तेरी बड़ीयाई,
भीख मंगवाओ चिन्ता न कोई..मन

मान होवे अपमान होवे,
फिर भी यह समझू मौज है तेरी..मन

तेरी हूँ गुरुवर तेरी रहूँगी,
हरगिज तुमसे जूदा न होऊँगी..मन

सतगुरु तेरा दर्शन पाकर,
आखों में सरूर आजाता है ।
जब दर पर तेरे पहुँच जाऊँ,
अपने पे गरूर आजाता है ॥०॥

तुम दोनों जहाँ के मालिक हो,
इस दिल की दौलत हो सतगुरु।
पास में तुम्हारे आते ही,
हर शैपे नूर आ जाता है ॥१॥

मिल जाय भीख महोब्बत की,
जिसको भी तेरे दर से दाता ।
जिन्दगी तो उसकी है जग में,
जीने का सरूर आ जाता है ॥२॥

पुण्य पाप भस्म हो जाते हैं,
दुःख मिट जाते हैं जन्मों के ।
जब तेरी दया से इस दिलमें,
ज्ञान का दीपक जल जाता है ॥३॥

लाखों तेरे दर पर आते हैं,
मुहं माँगी मुरादे पाते हैं
मैं निज स्वरूप की आस लिए,
करने पूजा आजाती हूँ ॥४॥

अगर इस जहाँ में भला तुम न मिलते,
बतादो तुम्हीं मेरा क्या हाल होता ।
अगर मेरे भगवन सहारा न देते,
बतादो तुम्हीं मेरा क्या हाल होता ।१।

खायी है ठोकर जमाने से हमने,
घायल हुआ था यह मन मेरा ।
अगर घाव भरने की दवा ही न देते,
बतादो तुम्हीं मेरा क्या हाल होता ।२।

जब जब मैं तड़फी तुम्हीं ने सहलाया,
जब जब में रोई, तुम्हींने हंसाया ।
अगर प्रेम आँचल, तुम्हारा न मिलता,
बतादो तुम्हीं मेरा क्या हाल होता ।३।

अंधेरा मिटाकर मेरे इस मन का,
उज्जवल सी ज्ञान ज्योति जगादी जो तुमने
यह ज्ञान ज्योति अगर तुम न देते,
बतादो तुम्हीं मेरा क्या हाल होता ।४।

सदा संग रहे तू श्वासों में समाये,
तेरी महिमा सतगुरु वरणी न जाये ।

अहं को छुड़ाकर खाली हमें कर दिया,
आतम की निष्ठा से अब मुझको भरदिया ।
इसी मैं की मस्ती में जीवन बिताये ।।१।। तेरी

मैला था मन तूने, उजला बना दिया,
माटि के देह में ही, हीरा जनादिया ।
तेरी रहमतों के हरदम रहते है साये ।।२।।तेरी

अन्धेरा था जन्मों का पल में मिटा दिया ।
हृदय में ज्ञान का दीपक जला दिया ।
तुमसे ज्योति पाकर हम भी जगमगाये ।।३।। तेरी

दर कई देखे, कोई चैन न आया,
किसी ने भी प्रभु को न पास बताया ।
निज घर में दिया तूने अनुभव कराये ।।४।। तेरी

अपने में जाना तो जग में है माना,
कोई भी मुझे अब न लगता बेगाना ।
आतम रूप में तूही सबमें समाये।।५।। तेरी

सब में रहो फिर भी सबसे हो न्यारे,
सभी भगतों को तुम लगते हो प्यारे ।
तेरी लीला जान अब हम भी मुस्कराये।।६।। तेरी

हम मस्तों की बस्ति में आता है कोई कोई,
रोती है सारी दुनियाँ, हँसता है कोई कोई ।।

दुनियाँ की रंग रलियों में, सब लोग भटकते हैं,
पर प्रेम की गली में, आता है कोई कोई ... हम

इस तन की मैल मलमल सबलोग छुड़ाते हैं,
पर मन की मैल को तो, छुड़ाता है निरंजन कोई ... हम

धन माल के ये दाता, जग में धनी बहुतेरे,
पर ज्ञान अभय दान का, दाता निरंजन कोई ... हम

जनमने मरनेवाला, सब लोग बताते हैं
मैं अजर अमर रूप, बताता निरंजन कोई ... हम

निन्दा स्तुति कुरोग, सब मन में बसाते हैं,
गुरु ज्ञान का तमन्ना करता है कोई कोई ... हम

पर गुरु के वचन को तो बसाता है कोई कोई,
हम मस्तों की बस्ति में आता है कोई कोई ।

मन श्रद्धाकरो विश्वास धरो,
तुझे ब्रह्म मिलेंगे अभी ही अभी ।
ज्ञान चक्षु बिन जो अंधे है,
वे जन भटकत ओर कहीं ।।0 ।।

तारों को देखा चन्दा को देखा,
नित उठ सूरज को नमन किया।
तीरथ में फिरा मन्दिर में गया,
कंठी तिलक अरु नाम लिया ।।१।।

सरयु में डुबा यमुना में डुबा,
काशी भी जाकर वास किया ।
चार धाम अरु कुंभ सभी जा,
स्नान ध्यान अरु दान किया ।।२।।

सप्ताह सुनी गीता वेद पढ़ा,
पाठ रामायण अखण्ड किया।
स्वर्ग गया, ब्रह्मलोक गया,
देव त्रिलोक का राज्य किया ।।३।।

सब कर्म उपासना करके भी,
मन को न कहीं विश्राम मिला।
ज्ञानदेव तु कैवल्यम्,
यह वेद शास्त्र प्रमाण मिला ।।४।।

अथातो ब्रह्म जिज्ञासा लेकर,
सद्गुरु शरण में जाय परो।
तत्त्वमसी महावाक्य सुनकर,
तुम सोऽहम् चिन्तन सतत करो।।५।।

ज्ञान नौका पर आरूढ़ होकर,
अब भवसागर को पारकरो।
निरंजन सद्गुरु केवट बिन,
तुम भवसागर क्यों डूब मरो ।।६ ।।

पूरा सतगुरु मिला दिया सरको झुका ।
जिसे मन ढूंढता था वो मिलही गया।।

पूजा पाठ भी की द्वारे मन्दिर गई ,
योग अभ्यास से वो मिल न सका ।
पोथी पुस्तक, फेरी माला बहुत ,
पर मुरझाया मन मेरा खिल न सका ।
प्रीत जिसने की है बाजी वोही जीत गया... पूरा

करने स्नान तीरथ को क्यों जाऊँ में ,
वचनामृत पिया सारा मल धुल गया ।
सोई किस्मत उठी, मेरी जाग यहाँ ,
घर बैठे मुझे सतगुरु मिलगया ।
प्रीत जिसने की है बाजी वोही जीत गया... पूरा

जिसे पानी है मुक्ति झुकाये वो सिर ,
फिर न कहना किसीने बताया नहीं ।
बिना सतगुरु के कोई पा न सका ,
आजतक तो किसीने बताया नहीं ।
प्रीत जिसने की है बाजी वोही जीत गया... पूरा

कभी राम बन, कभी श्याम बने ,
आज सतगुरु रूप में आ ही गये ।
दुनियाँ निन्दा हमेशा ही करती रहे ,
पर भक्तों के मन को सदा भागये ।
नफरत बीत गई दिल में प्यार आगया ।... पूरा

पूरा सतगुरु मिला दिया सर को झुका
जिसे मन ढूंढता था वे मिलही गया... पूरा

लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।

कभी तो याद करते थे, के छुप-छुप आहें भरते थे,
अब पर्दा उठा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।१।
... लगन तुमसे

कभी तो डरते थे, दुनियाँ हमें बदनाम कर देगी,
शरम अब बेच-खा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
... लगन तुमसे

दीवाने बनगये तेरे तो, इस दुनिया से क्या मतलब,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।२।
... लगन तुमसे

मैं सर्व समर्पण कर बैठी, तुम्हारे एक इशारे पर,
ये दिल अब लगता नहीं, जो होगा देखा जाएगा।३।
... लगन तुमसे

तुम्हारी बेरुखी से दिल, ये मेरा टूट जाएगा,
तुम पे जीवन लुटा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।४।

लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।

महिमा अगम अगोचर अपारा,
कैसे यश गाऊं सतगुरु तुम्हारा ।
चारों वेदों ने यश को है गाया,
विष्णु अज शिव ने गुरु पद को गाया ।।
एक तुम हो सभी के आधार....कैसे यश गाऊँ ।

सारा जीवन का तुमने लखाया,
झुठे सपने से हमको जगाया ।
सारे कष्टों से पाया किनारा....कैसे यश गाऊँ

देह अध्यास तुमने छुड़ाया,
जन्मने मरने का भय है नसाया ।
डूबती थी बने तुम सहारा....कैसे यश गाऊँ

जोकि एक रस है सबमें समाया,
जिसमें कल्पित ये जग जीव माया ।
रूप आतम का ऐसा निहारा....कैसे यश गाऊँ

दस्तूरे मुहब्बत बस एक यही,
हस्ती को मिटाना पड़ता है ।
जिस दुःख को फरीस्ते सह न सके,
उस दुःख को उठाना पड़ता है ।।0।

जरा गफलत हुइ या नजर चूकी,
चोरों ने सभी दौलत लूटी ।
गुरु ज्ञान का दीपक हृदय में,
दिनरात जलाना पड़ता है ।।१।

मन्दिर में गया मस्जिद में गया,
जंगल में न उसका पता पाया ।
सब समझ आई तो यह समझा,
सतगुरु दर जाना पड़ता है।।२।

ईश्वर का मिलना आसान है,
सद्गुरु का पाना मुश्किल है ।
काबिल सद्गुरु पाने के लिये,
सर भेंट चढ़ाना पड़ता है ।।३।

जब नजरे करम सतगुरु ने दी,
मंजिल फिर उसकी दूर नहीं ।
हो नजरे करम पाने के लिये,
सतगुरु को रिझाना पड़ता है ।।४।

सतगुरु पर बलिहारी जाऊँ ।
सतगुरु पर बलिहारी रे ।0।

जिस अज्ञान से बहु भरमाया,
भोगा दुःख अपारा रे ।
दया करी ब्रह्मज्ञान कराकर,
दूर किया अंधारा रे ।।१।।

जिस प्रभु को दुनिया खोजे,
कर भक्ति साकारा रे ।
ब्रह्मा विष्णु पचि पचि हारे,
नहीं जाको आकारा रे ।।२।।

जिन सतगुरु ने दीदार कराया,
शीश दिया न्योछारा रे ।
कहे निरंजन गुरु शरण बिन,
होय न भव के पारा रे ।।३।।

सतगुरु भ्रान्ति मिटावत प्यारे,
सतगुरु भ्रान्ति मिटावत रे ॥०॥

ज्ञान प्रकाश हृदय में करके,
तम अज्ञान मिटाया रे ।
देह भाव को मनसे हटाकर,
आतम स्वरूप जनाया रे ॥१॥

घट मठ भेद से एकहि नभ में,
द्वैत रूप दर्शाया रे ।
तिमि माया अविद्या दोउ उपाधि,
ब्रह्म में भेद लखाया रे ॥२॥

हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
वेद वचन बतलाया रे ।
जन्म मरण गुरु बन्धन काटा,
परम धाम पहुँचाया रे ॥३॥

इस तन को विष बेल ही जानो,
गुरु अमृत कहाया रे ।
निरंजन गुरु पर जाउँ बलिहारी,
जिसने भ्रम नसाया रे ॥४॥

मुक्ति का मारग जानो भैया,
मुक्ति का मारग जानो रे ||0||

आतम ज्ञान बिना नहि मुक्ति,
कर्म करो विधि नानारे ।
सदगुरु बिना ज्ञान नहीं होवे,
पढ़कर वेद पुराना रे ||१||

तन से गुरु की सेवा कीजे,
मन से ध्यान लगाना रे ।
वाणी से कर गुरु की महिमा
धन की भेंट चढ़ाना रे ||२||

पूरण सद्गुरु की कृपा से,
पाओ पद निर्वाणा रे ।
कहे 'निरंजन' गुरु शरण से,
अपना काम बनाना रे ||३||

सतगुरु पर बलिहारी जाऊँ ।
सतगुरु पर बलिहारी रे ।0।

निष्काम भाव से कर्म करा कर,
मन का दोष हटाया रे ।
ध्यान प्राण का मुझे सिखाकर,
चंचल मन ठहराया रे ।।१।।

ब्रह्म ज्ञान दे द्वैत हटाकर,
सोऽहम् रूप जनाया रे ।
आत्म भाव जाग्रत करके,
देह अभिमान मिटाया रे ।।२।।

अहं ब्रह्म का निश्चय कर के,
कर्ता भाव को खोया रे ।
कहे 'निरंजन' अनुभव अपना,
जीवन मुक्ति कराया रे ।।३।।

अगर मोह निशा से जगाया न होता
तो परमज्ञान ये पाया न होता ।।टेक।।

लखाता मुझे कैसे निज रूप आतम ।
जो अज्ञान परदा हटाया न होता ।।
अगर ..।।

जनम व मरण के न कटते ये बन्धन ।
अमर ज्ञान गर यह सुनाया न होता ।।
अगर ..।।

कभी नरक और कभी स्वर्ग जाता ।
अगर भेद भ्रम को मिटाया न होता ।।
अगर ..।।

तुम्हारी कृपा की नजर गर न होती ।
तो विज्ञान ये रंग आया न होता ।।
अगर ..।।

हरिहर आदिक जगत में पूज्य देव जो कोय ।
सद्गुरु की पूजा किए, सब की पूजा होय ।।
अगर ..।।

गुरु के वचन सुनो हो साधु,
गुरु के वचन सुनो रे ।0।

सतगुरु के उपदेश सुनने से,
ज्ञान चक्षु खुल जाता रे ।
ब्रह्म सत्य जगत है मिथ्या,
ऐसा वेद बखाना रे ।।१।।

सोऽहम् रूपसे जाना निजको,
मिटा सकल भव भ्रमणा रे ।
रस्सी में सर्प समान जगत को,
सदगुरु दिया बुझाना रे ।।२।।

पंच भ्रान्ति का नाश हुआ अरु,
चिद् जड़ ग्रन्थि कटाना रे ।
निरन्जन गुरु पर न्योछावर हो,
आत्म साक्षात् कराना रे ।।३।।

सद्गुरु की पहचान है भैया,
सद्गुरु की पहचान है ॥0॥

जैसे भृंगी सद्गुरु शिष्यको,
अपना रूप बनाते हैं ।
जैसे धोबी सद्गुरु पूरण,
बुद्धि का मैल हटाते हैं ॥१॥

चन्दन सम गुरु शीतल करके,
तीनों ताप बुझाते हैं ।
ज्यों गंगा गुरु पावन करके
सारे पाप मिटाते हैं ॥२॥

केवट सम गुरु भवसागर से,
निश्चय पार लगाते हैं ।
कहे 'निरंजन' गुरु सूर्य बन,
अज्ञान तिमिर मिटाते हैं ॥३॥

गुरुदेव तुम्हारी महिमा को, अज्ञानी जीव भला क्या जाने ।
अभिमान भरा है जिस दिल में, वह नमस्कार को क्या जाने ।।

जो पाखंडों में मस्त रहे, वह सत्य धर्म को क्या जाने ।
जो नाच कूद कर लोक रिझावे, वे आत्म धर्म को क्या जाने ।।

ज्ञान चक्षु बिन जो अन्धे हैं, वह ब्रह्मरूप जग क्या जाने ।
जिसे सन्त चरण में श्रद्धा नहीं, वह ज्ञान मोक्ष प्रद क्या जाने ।।

भोक्ता भाव है जिस मन में, वह साक्षी भाव को क्या जाने ।
जो ज्ञान मार्ग में आया नहीं, वह कैवल्य मुक्ति को क्या जाने ।।

जो अधम स्वयं को मानत है, वह पुरुषोत्तम को क्या जाने ।
जो सत्संग में न जाय कभी, वह मूढ़ विवेक को क्या जाने ।।

जो मृग कस्तूरी खोज करे, वह स्वयं सुगन्ध को क्या जाने ।
जो प्रभु पाने हित गृह त्यागे, वह अखंड ब्रह्म को क्या जाने ।।

जो भेद भक्ति ही करते हैं, वे निर्भय पद को क्या जाने ।
जड़ ज्योति का जो ध्यान करे, वह स्वयं प्रकाश को क्या जाने ।।

सतगुरु तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जावे ।
मस्तक पर लगते ही, यह जीव शिव हो जावे ।।

प्रभो आपके वचनों का यह मन बड़ा प्यासा है ।
सत्संग के मिलते ही, परम शांत हो जावे ।।

सुनते है तेरी कृपा, दिन रात बरसती है ।
ज्ञान स्नान के होते ही, मर अमर हो जावे ।।

यह मन बड़ा दीवाना, दिन रात मचलता है ।
मोह ममता में फंसकर, सत पथ से न गिर जावे ।।

सतगुरु मेरे जीवन की, बस एक ही इच्छा है ।
मिलता रहे सत्संग हमें, जग में न मन जाये ।।

स्वामी निरंजन कहते हैं, रहे ध्यान शिवोऽहम् ।
ब्रह्म रूप देखें जग सारा, प्रेम से मन भर जावे ।।

गुरु शरण नित रहना प्यारे,
गुरु शरण नित रहना रे ।0।

चाहे जप तप तीरथ करले,
अष्टांग जोग कमावे रे ।
गुरुविन भव निधि तरे न कोई
ऐसे वेद बतावे रे ।।१।।

सतगुरु के संग हरदम रहना,
ममता मोह मिटावे रे ।
दृश्य जगत से मन हटाकर
निज स्वरूप समावे रे ।।२।।

ब्रह्मज्ञानी सतगुरु पूरण,
संशय भ्रम मिटावे रे ।
भेद वादी से भ्रम नहीं जावे,
फिर फिर योनि पावे रे ।।३।।

कहे 'निरंजन' जो पूरण गुरु के,
चरणे ध्यान लगावे रे ।
भव सागर से पार हुआ वह,
आतम भाव जगावे रे ।।४।।

सद्गुरु रूप लखाया हमको,
सतगुरु रूप लखाया रे ।0।

अस्ति भाति प्रिय एक पहचानो,
नाम रूप से न्यारा रे ।
तूम हो पूरण सागर के सम,
पावे नहि कोउ पारा रे ॥१॥

तेरी लहरी है जग सारा,
देह मनुज अवतारा रे ।
जो कुछ दीखत सो सब तुम हो,
तेरा सकल पसारा रे ॥२॥

तुझ बिन दूजा और न कोई,
तुमहि सिरजन हारा रे ।
कहे निरंजन' सब तेरी महिमा,
कहते शास्त्र हजारा रे ॥३॥

गुरु बिन मुक्ति कबहुँ न होवे,
गुरु बिन मुक्ति कबहुँ रे ॥0॥

योग कला को धारण करके,
कुण्डलनी जगावे रे ।
अर्ध गगन में आसन मारे,
प्राण गति अटकावे रे ॥१॥

अष्ट सिद्धि नव निधि पाकर,
गुप्त प्रकट दर्शावे रे ।
मन वाञ्छित फल सबको देवे,
भूत भविष्य वतलावे रे ॥२॥

जन्म जन्म धरि उल्टा लटके,
कन्द मूल फल खावे रे ।
निगुरे को नहि मुक्ति 'निरंजन'
जन्म मरण भरमावे रे ॥३॥

गुरु बिन ज्ञान न होवे कबहुँ,
गुरु बिन ज्ञान न होवे रे ॥0॥

कोटि देव को जो आराधे,
नाम जपे दिन राती रे ।
शास्त्र पढ़े अरू गन्थ रचावे,
शास्त्रीजी कहलात रे ॥१॥

सब तीर्थों का सेवन करलो,
तनिक न मन ठहरात रे ।
पूर्वाश्रम अरू नाम बदल कर,
परमानन्द कहात रे ॥२॥

पांच अग्नि में आप जलावे,
करे देह की घात रे ।
लाखों वर्ष हिमालय भीतर,
अखण्ड समाधि लगात रे ॥३॥

अन्न तजि उपवास करे अरु,
प्राण पवन ही खात रे ।
कहे 'निरंजन' ब्रह्मादिक भी,
गुरु बिन शान्ति न पात रे ॥४॥

भाग्य बड़ो में सतगुरु पायो,
मन की दुविधा दूर नसाई ॥0॥

बाहार ढूँढ़ फिरा मैं जिनको
सो वस्तु घट भीतर पाई ॥१॥

सकल जून जीवन के माहीं,
पूरण ब्रह्म जोत दरसाई ॥२॥

जन्म–मरण के बन्धन काटे,
चौरासी लख त्रास मिटाई ॥३॥

निरंजन चरण बलिहारी,
गुरु महिमा से अधिकाई ॥४॥

गुरु कृपा से जो कुछ मिलिया,
सो सब खेल सुनाता हूँ ।
ध्यान देकर सुनना प्यारे,
मन की बात बताता हूँ ।।0।।

बहुत जन्म मा झगड़ा मेरा,
धर्म राज से चलता था ।
नाना योनि में जन्म पाकर,
हर माँ का दूध पचाता था ।।१।।

आकर चार लक्ष चौरासी,
अनादि से मैं फिरता हूँ ।
पाकर ज्ञान सब कर्म जलायें,
और जन्म नहीं पाता हूँ ।।२।।

कर्ता भाव का त्याग करके,
केवल साक्षी रहता हूँ ।
कहे 'निरंजन' गुरु कृपा से,
नित्य मुक्त मैं रहता हूँ ।।३।।

करो मन गुरु भक्ति प्रधान
गुरु भक्ति महिमा गाते,
सन्त शास्त्र सुजान ॥0॥

पूरण श्रद्धा गुरु में करके
सेवा करो निराभिमान।
पादपद्म पर दंडवत कीजे,
लीजे आतम ज्ञान ॥१॥

तर्क तजे विश्वास धरे उर,
मानो गुरु भगवान ।
गुरु ऊपर तुम सर्वस्व वारो,
तन मन धन कर दान ॥२॥

पार ब्रह्म का रूप समझकर,
धर सद्गुरु का ध्यान ।
कहे 'निरंजन' इस विधि तेरा,
निश्चित हो कल्याण ॥३॥

आतम पद का सद्गुरु दाता,
आतम पद का दाता रे ।
साधन चतुष्टय शरण जो आता,
अधिकारी कहाता रे ॥0॥

मृग नाभी माहि कस्तूरी,
बाहर ढूंढ़त मरता रे ।
ऐसा आतम तन में रहता,
मूरख बाहर फिरता रे ॥१॥

अज्ञान ताला लगा द्वारपर,
ज्ञान चाबी से खुलता रे ।
इस लोक से ब्रह्मादि लोक सुख,
जिसको नहीं सुहाता रे ॥२॥

वही मुमुक्षु गुरु शरण जा,
तन मन भेंट चढ़ाता रे ।
कहे 'निरंजन' वही वैरागी,
मुक्ति पद को पाता रे ॥३॥

जब से मिले मोहे सद्गुरु जी,
कट गये बन्ध चौरासी जी ॥0॥

दिल में मेरे प्यार तेरा,
श्वांसों में है नाम तरो ।
आँखों में तस्वीर तेरी,
जीवन में है मस्ति भरी ॥१॥

..जबसे

जब से तेरा संग किया,
वचनामृत का पान किया ।
जाग गई तकदीर मेरी,
भाग गई भव पीर मेरी ॥२॥

..जबसे

अब कछु और न भावत है,
तेरे बिन सब अनभावत है ।
तन मन धन सब सौंप दिया,
तेरी मरजी पर छोड़ दिया ॥३॥

..जबसे

तू मिल गया मुझे औरों से क्या,
दुनियां रूठ भी जावे तो क्या ।
सब से मनवा मोड़ लिया,
तेरे संग नाता जोड़ लिया ।।४।।
..जबसे

तू ही दवा अकसीर मेरी,
सच कहती हूँ कसम तेरी ।
तू मेरे दिल का मालिक है,
भव सागर का नाविक है ।।५।।
..जबसे

बस यहीं कामना करती हूँ,
आंचल फैलाकर मांगती हूँ ।
मिलता रहे सत्संग तेरा,
जाये न कुसंग में मन मेरा ।।
सच कहती है 'शान्ता' तेरी,
तू सूरज में किरण तेरी ।।६।।
..जबसे

अय प्राण प्यारे गुरु वर,
हमको न भूल जाना ।
अब दया करके जल्दी,
दर्शन हमें कराना ।।0।। अय...

उपकार जो किया है,
जाता नहीं बखाना ।
आवागमन का बन्धन,
पड़ा आपको छुड़ाना ।।१।। अय...

यह ज्ञान का बगीचा,
प्रभो आपने लगाया ।
न सूख जावे इसको,
पानी पुनः पिलाना ।।२।। अय...

सोये हुए थे हम सब,
प्रभो आपने जगाया ।
रास्ता दिखाके सच्चा,
निर्भय हमें बनाया ।।३।। अय...

जबहो अज्ञान अंधेरा,
तुम सूर्य बन के आना ।
संशय जो हो हमें तो,
महावाक्य फिर सुनाना ।।४।। अय...

रोते हुए हम सभी को,
विश्वास दिलाके जाना ।
फिर दिव्य ज्ञान मूर्ति का,
किस वक्त होगा आना ।।५।। अय...

प्रभो ! आपकी विदाई,
हम को जला रही है ।
हे नाथ ! जल्दी आकर,
विरह अग्नि को बुझाना ।।६।। अय...

हुई जो भूल हमसे,
उनको न मन में लाना ।
निहारेगी 'शान्ता' तुमको,
हे नाथ ! जल्दी आना ।।७।। अय...

जय बोल सद्‌गुरु स्वामी की
घट घट के अन्तरयामी की ...जय

जिन आन भक्तों का उद्धार किया,
मुझ पतित को भी तार लिया;
अस पतित पावन प्यारे की ...जय

अज्ञान तिमिर हटाई दिया,
स्व–स्वरूप का भान कराई दिया;
अस पतित पावन प्यारे की ...जय

हमें मोक्ष का मार्ग दिखाई दिया,
इस भव सागर से उबार लिया;
अस परमानन्द प्यारे की ...जय

जिन जगत के हित अवतार लिया,
शुद्ध चैतन्य को दर्शाय दिया;
अस सच्चिदानन्द दिनेशा की ...जय

जब– जब भक्तों ने पुकार किया,
तब–तब आकर प्रभु ज्ञान दिया;
अस 'शान्ता' स्वामी निरंजन'की...जय

हे मेरे गुरु देव सब संशय मिटाये आपने,
जीवसे शिव लखा दिया, निर्भय बनाया आपने ।
मुझको जगाया आपने, अपना बनाया आपने ।।0।।
हे मेरे....

मैंने समझा था कभी–जन्म मृत्यु है मेरी ।
आत्मा का परिचय तो मुझ को कराया आपने ।।१।।
हे मेरे....

मैंने समझी थी सदा कर्ता हूँ व भोक्ता हूँ मैं ।
असंग साक्षी रूप तो मुझको लखाया आपने ।।२।।
हे मेरे....

मोह माया के ही दुःख में सदा सोई थी मैं ।
ज्ञान गीता का सुना मुझको जगाया आपने ।।३।।
हे मेरे....

विषय भोगों से ही सुख की, भीख थी नित मांगती ।
सच्चिदानन्द रूपको लखा,
शहनशाह बनाया आपने ।।४।।
हे मेरे....

गुरु चरण में रहना प्यारे,
गुरु चरण में रहना रे ।
हरि गुरु संत एक रूप हैं,
यह निश्चय कर लेना रे ॥१॥

हरि गुरु संत चरण की सेवा,
करके शासन सहना रे ।
तन मन धन कुरबान करीके,
शीश समर्पि देना रे ॥२॥

शीतल शांत सदा समदर्शी,
अरु अनुभव के ऐना रे ।
भेद भरम के भय को भांगी,
कहे अभेद के बैना रे ॥३॥

जीव भाव को जड़ से काटी,
कर ब्रह्म चिन्तन चैना रे ।
दाश गरीब संशय–सब त्यागी,
अहं ब्रह्म मुख कहना रे ॥४॥

गुरु बिन ज्ञान न आवे मनुआ,
गुरु बिन ज्ञान न आवे रे ।।0।।

जप तप योग यज्ञ व्रतधारी,
अन्न तजी फल खावे रे ।
बैठ द्वारका छापही लेवे,
काशी करवत खावे रे ।।१।।

चार कुंभ अरु अड़सठ तीरथ,
चारधाम फिरि आवे रे ।
योग धारणा करके योगी,
प्राणगति अटकावे रे ।।२।।

दंड कमंडल करमें माला,
जटा मुकुट बनवावे रे ।
देश त्यागकर वेश धरावे,
भस्मी अंग लगावे रे ।।३।।

वेद शास्त्र अरु भगवत गीता,
उपदनिषद फरमावा रे ।
दास गरीब ब्रह्मातम निश्चय,
गुरु मुख ते कर पावे रे ।।४।।

मोहि लागि लगन गुरु चरणन की
गुरु चरणन की, गुरु चरणन की गुरु चरणन की

गुरु चरणों में राम कृष्णादिक,
आकर शीश झुकावन की ... मोहि

साधन चतुष्टय हो जब गई शरण में,
तन मन धन सब अर्पण की ... मोहि

चरण बिना मोहे कछु नहिं भावे,
दुनियाँ सबहि है मतलब की ... मोहि

भव सागर सब सुख गयो है,
फिकर नहीं मोहे तरनन की ... मोहि

मीरा के गुरु आनन्द सागर,
शरण ग्रही उन चरणन की ... मोहि

गुरूदेव निरंजन मिलहि गये,
क्यों आस करुं इसकी उसकी ।।० ।।

गुरुदेव ने जब मेरी बाँह ग्रही,
क्यों बाँह ग्रहु मैं इस उसकी ।।१ ।।

गुरुदेव ने जब सिर हाथ रखा,
क्यों भय करुँ इसकी उसकी ।।२।।

जब रूप अनुप छटा उनकी,
छबि और लखुँ क्यों इस उसकी ।।३।।

जब प्रीति अपार लखि मुझपर,
मैं प्रीति करुं क्यों इस उसकी ।।४।।

जब चरण शरण गुरूदेव मिले,
मैं शरण चहूँ क्यों इस उसकी ।।५।।

सब चाह अचाह हुई मनकी,
क्यों पूजा करूँ इसकी उसकी ।।६।।

गुरु देव तुम्हारी शान्ति छटा,
गर नयनों में बस जावेगी ।
फिर तो इस दुनिया दारी की,
यह मोह निशा हट जावेगी ॥१॥

दिनरात विषय के फन्दों में,
यह मन भरमाया रहता है ।
हे करूणामय जब करो कृपा
तब भ्रान्ति सभी मिट जावेगी ॥२॥

अज्ञान से देह अध्यास है वह,
नष्ट भ्रष्ट हो जावेगा ।
जब आपकी अचल ज्ञान ज्योति,
मन मन्दिर में जग जावेगी ॥३॥

फिर दैहिक दैविक अरु भौतिक,
दुःख सहने की शक्ति होगी ।
अरु बुद्धि भी ये निर्मल होकर,
सत चिन्तन में लग जावेगी ॥४॥

है विनय सदा यह गुरुवर से,
अनुकूल हमेशा हो मुझपर ।
रहे ध्यान आपके चरणों में,
जग द्वन्द व्यथा कट जायेगी ॥५॥

अगर मोह निशि से जगाया न होता,
तो फिर परम धन ये पाया न होता ||0||

लखाता मुझे कैसे निजरूप आतम,
जो अज्ञान पर्दा हटाया न होता ||१||

जनम व मरण के न कटते ये बन्धन,
अमर ज्ञान गर यह सुनाया न होता ||२||

कभी नरक में और कभी स्वर्ग जाता,
अगर भेद भ्रम को नशाया न होता ||३||

तुम्हारी कृपा की नजर गर न होती,
तो 'विज्ञान' ये रंग आया न होता ||४||

भरोसा कर तू सद्गुरु पर,
तुझे रोना नहीं होगा ॥
ये जीवन हँस के बितेगा,
तुझे पछताना न होगा ॥0॥

सुख-दुःखों को देखते रहना,
कभी न मान तू अपना ।
जगत को जान एक सपना,
साक्षी बन देखते रहना ॥१॥

न कर्ता बनके कर कुछ भी,
न पड़ तू मृत्यु के बन्धन ।
तू द्रष्टा तीन देहोंका,
जिसे करते सभी वन्दन ॥२॥

यह देह पाँच भूतों का,
नहीं कर इसमें तू ममता ।
जगत एक पुष्प की माला,
तू सब में सूत्रवत रमता ॥३॥

नहीं कुछ साथ में लाया,
नहीं कुछ साथ जावेगा ।
निरंजन गुरु शरण बिना,
नहीं कोई मोक्ष पावेगा ॥४॥

बड़ा सुहाना दिवस आज, पावन संत पधारे हैं ।
खुले भाग हम सबहि के, साक्षात् ब्रह्म पधारे हैं ।।

मान बड़ाई की नहीं आशा, साम्य भाव मन रखते हैं ।
जिज्ञासुओं का भ्रम छुड़ाने, निशि दिन तत्पर रहते हैं ।।

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, परम प्रसन्न जो रहते हैं ।
ऐसे मंचस्थ सभी संतजन, दुःख समूल को हरते हैं ।।

सभी सम्प्रदाय के श्रोताओं से, हम निवेदन करते हैं ।
छोड़ मताग्रह आओ सभी यहाँ, जो सत्य जिज्ञासा करते हैं ।।

वेदान्त तत्त्वके जिज्ञासु सभी हम, प्रेम पुष्प का हार लिये ।
नत मस्तक हो करे आरती, अमृत रस पीने के लिये ।।

मिलता रहे सत्संग सभी को, तत्त्वज्ञान का श्रवण करें ।
तत्त्वमसि उपदेश ग्रहण कर, सभी शिवाऽहम् ध्यान करें ।।

वेद विरुद्ध द्वैत उपदेश का, भले कोई चित्कार करें ।
फिरभी सोऽहम् भावको तजके, नहिं दासोहम् स्वीकार करें ।।

जो डूबे सो डूबे भलेहि, हमतो लगे किनारे है ।
बड़ा सुहाना जीवन होगा, जबहि शिवोऽहम् धारे हैं ।।

स्वामी निरंजन करे कृपा तो, फिर ऐसा ही अवसर आये ।
अखंड शान्ति शिविर लगाकर, फिर दर्शन का मौका पाये ।।

सतगुरु पाने के लिये, हस्ति को मिटाना पड़ता है ।
मोक्ष पद पाने के लिये, धर्म की भेंट चढ़ाना पड़ता है ।।

भगवान के धाम जाकर भी, फिर लौट के आना पड़ता है ।
परमधाम पाने के लिये, सद्गुरु द्वारे जाना पड़ता है ।।

श्रद्धा का दीप हृदय में रख, दिन रात जलाना पड़ता है ।
जहाँ श्रद्धा घटी या अहं बढ़ा, योग भ्रष्ट हो जाता है ।।

तन, मन, धन सब अर्पित कर, शरणागत हो जाता है ।
फिर ज्ञान चक्षु के खुलते ही, सब ब्रह्म रूप ही पाता है ।।

बहुत जन्म के शुभ कर्मों से, यह अवसर को पाता है ।
कहत निरंजन वह बड़भागी, जो फिर जन्म नहीं पाता है ।।

साधो ! सहज समाधि भली ।
गुरु कृपा जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ।।

जहँ जहँ डोलूं वही परिक्रमा, जो कछु करौं सो सेवा ।
जब सोऊं तब करुं दण्डवत, पूजौ और न देवा ।।

कहुं सो नाम सुनो सोइ सुमिरन, खाऊँ पियुं सो पूजा ।
गिरह उजाड़ एक सम लेखुँ, भव मिटावुं दूजा ।।

आँख न मून्दु कान न रुंधु, तनिक कष्ट नहीं घारूँ ।
खुले नैन पहचानु हंसिहंसि, सुन्दर रूप निहारूँ ।।

शब्द निरन्तर से मन लगा, मलिन वासना त्यागी ।
उठत बैठत कबहुँन छूटै, ऐसी तारी लागी ।।

कहे 'कबीर' यह जीवन मुक्ति, सो प्रगट कर गाई ।
सुख-दुःख से जो परे परमपद, तामे सुरति समाई ।।

पायो जी मैंने आत्म रतन धन पायो

वस्तु अमोलक दीन्हा रे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ।।१।।

जनम जनम की पूँजी पायो,
जग में सभी खोवायो ।।२।।

खरचे न कोई चोर न लेवे,
दिन दिन बढ़त सवायो ।।३।।

सत की नाव खेवटिया सद्गुरु,
भवसागर तर आयो ।।४।।

'मीरा' के गुरु रैदास स्वामी,
हरख हरख यश गायो ।।५।।

गुरु विमुखन से दूर ही रहना,

गुरु विमुखन से दूर रे ।।0।।

गुरु विमुख जो जप तप करता,

सहे कष्ट अपार रे ।

ध्यान धरे अरु देव आराधे,

नेम धर्म आचार रे ।।१।।

ठाकुर की नित पूजा करता,

फल जल करे आहार रे ।

वेद पुराण रामायण गीता,

पढ़ता बिन विचार रे ।।२।।

मस्तक मुण्डन भस्मी तन पर,

इन्द्रिय देवे मार रे ।

घर कुटुम्ब का त्याग करके,

मन से दिया बिसार रे ।।३।।

दिगम्बर होकर हिमालय बैठ,

तनको करे छार रे ।

कहे 'निरंजन' गुरु विमुख ते,

जावे यम के द्वार रे ।।४।।

मुझमें राम, तुझमें राम, सबमें राम समाया ।
करलो सब से प्यार जगत् में, कोई नहीं पराया ।।0 ।।

जितने हैं सब जग के प्राणी, सब में एक ही ज्योति ।
एक डाल के फूल हम सब, इक माला के मोती ।।
एक कारीगर ने, एक माटी से, हम सबको है बनाया ।
करलो सब से प्यार जगत में कोई नहीं पराया ।।
मुझमें राम तुझमें राम... ।।१ ।।

एक बाप के बेटे हम सब, एक हमारी माता,
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता ।
फिर क्यों, किस मूरख ने हमको, द्वैत का पाठ पढ़ाया ।
करलो सबसे प्यार जगत में कोई नहीं पराया ।।
मुझमें राम तुझमें राम... ।।२ ।।

ऊँच नीच अरु भेद भाव की, दीवारों को तोड़ो ।
छल को छोड़ो, सच को पकड़ो, गुरु चरणे चित जोड़ो ।
जागो और जगाओ सबको अमृत बेला आया ।
करलो सबसे प्यार जगत में कोई नहीं पराया ।।
मुझमें राम तुझमें राम... ।।३ ।।

मुझमें राम तुझमें राम सब में राम समाया,
करलो सबसे प्यार जगत में कोई नहीं पराया ।

सियाराम मय सब जग जानो,
सियाराम मय जानो रे ।।0।।

घट घट मांही राम को लखना,
वैर न काहू करना रे ।
भीतर बाहर सर्व चराचर,
एक राम ही लखना रे ।।१।।

घृणा भाव न किससे करना,
निंदा से तुम डरना रे ।
अपमान करो नहीं कभी किसीका,
कटु वचन नहीं कहना रे ।।२।।

जीव दया तुम मनमें रखना,
कबहुँ न हिंसा करना रे ।
ऊँच नीच का भेद न करना,
सबमें समता रखना रे ।।३।।

भेद भक्ति को मनसे हटाकर,
अद्वैत ज्ञान में डटना रे ।
कहे 'निरन्जन' गुरु शरण जा,
जन्म-मरण दुःख कटना रे ।।४।।

जब जायेंगे यहाँ से कुछ भी ना पास होगा
कुछ भी ना साथ होगा
दो गज का एक कपड़ा अपना लिवास होगा ।।0 ।।

जब आयेगा निमन्त्रण, रुक पायेंगे न एक क्षण ।
रह जायेंगे पड़े सब, धन, कोष और कंचन ।
जब आयेगा निमन्त्रण, रुक पायेंगे न एक क्षण ।
रह जायेंगे खड़े सब, पति, पत्नी और स्वजन ।
कह तक ना पायेंगे तब मन में जो भाव होगा ।
तन में जो कष्ट होगा ।
दो गज का एक कपड़ा अपना लिवास होगा ।।१ ।।
जब जायेंगे.........

क्यों हम किसे सतायें क्यों हम किसे रुलाऐं ।
क्यों लूट धन किसीका अपना महल सजाऐं। (२)
जब जानते हैं अन्तिम मरघट में वास होगा ।
भूमि में वास होगा ।
अग्नि में जलना होगा ।
दो गज का एक कपड़ा वह भी ना साथ होगा ।।२ ।।
जब जायेंगे.......

कुछ भी नहीं है तेरा कुछ भी नहीं है मेरा ।
कहते हैं इसको दुनियाँ पल भर का है बसेरा। (२)
जायेंगे जब बिछुड़कर कोई निरास होगा ।
कोई उदास होगा ।
न पति साथ देगा न पुत्र साथ होगा ।।३।।
जब जायेंगे......

जायेंगे जब यहाँ से अपने उठाके डेरे ।
भव सिन्धु के भँवर में जायेंगे सब वे घेरे । (२)
कोई कामदास होगा कोई दामदास होगा
कोई रामदास होगा कोई कृष्णदास होगा
केवल वही तरेगा जिसे आत्म भास होगा
जिसे सोऽहं भास होगा ।।४।।

जब जायेंगे......

मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया
मैं तो हूँ तेरे पास में ।

नहीं तीरथ में नहीं मन्दिर में,
नहीं एकान्त निवास में ।
नहीं सूरज में नहीं चन्दा में,
नहीं पर्वत कैलाश में ॥
मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया मैं तो हूँ तेरे पास में ।।१ ।।

नहीं वृन्दावन नहीं अयोध्या,
नहीं स्वर्ग वैकुण्ठ में ।
नहीं राम में नहीं कृष्ण में,
नहीं भूमि आकाश में ।।
मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया मैं तो हूँ तेरे पास में ।।२ ।।

नहीं वेश में नहीं केश में,
नहीं सन्यास वैराग्य में ।
नहीं गंगा में नहीं यमुना में,
नहीं त्रीवेणी स्नान में ।।
मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया मैं तो हूँ तेरे पास में ।।३ ।।

ना मैं जप में ना मैं तप में,
ना मैं व्रत उपवास में ।
नहीं पूजन में नहीं ध्यान में,
सब श्वासों के साथ में ।।
मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया मैं तो हूँ तेरे साथ में ।।४।।

खोजी होय तुरत मिल जाऊं,
सोऽहम् के विचार में ।
कहत निरन्जन सुनो मेरे भैया,
मैं हूँ साक्षी रूप में ।
मैं हूँ द्रष्टा रूप में ।
मैं हूँ आत्मा रूप में ।
मैं हूँ चेतन रूप में ।
मुझको कहाँ तू ढूंढे रे भैया
मैं हूँ मैं के रूप में ।।
मैं तो हूँ सब रूप में ।

इस काया का होता विनाश है ।
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।।0।।

पंचभूतों का तन विस्तारा
तु तो द्रष्टा है देखन हारा
तु तो ज्ञाता है जानन हारा
तेरा कण कण में रहता निवास है
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।१।।

जैसे गहनों में सोना ही पाया
तैसे घट घट में तुहि समाया
जैसे गागर में मिट्टी ही पाया
तैसे घट घट में तुहि समाया
जग तेरा ही लीला विलास है
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।२।।

जाग जल्दी ये सपने की माया
आपको भूल क्यों भरमाया
आतम को भूल देह में फँसाया
स्वामी होके बना क्युँ दास रे
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।३।।

भूल तेरी है तु ही मिटादे
पूर्ण ब्रह्म हूँ निश्चय जगाले
मिटे जन्म-मरण कि त्रास है
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।४।।

इस काया का होता विनाश है
तु तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।।

ब्रह्मरूप पहिचानो साधो
ब्रह्मरूप पहिचानो रे ॥

कान ब्रह्म नहीं, शब्द ब्रह्म नहिं
कान उसे नहिं सुनता रे ।
ब्रह्म रूप तुम जानो उसको
जो कानों में सुनता रे ।। ब्रह्मरूप....

आँख ब्रह्म नहीं, रूप ब्रह्म नहीं
आखों से नहीं दिखता रे ।
ब्रह्म रूप तुम जानो उसको
जो आँखों में देखत रे ।। ब्रह्मरूप....

वाणी ब्रह्म नहीं, मन्त्र ब्रह्म नहीं
जप करी करी हारे रे ।
वाणी जिससे प्रकाशित होय
ब्रह्म कहावत् सोय रे ।। ब्रह्मरूप....

प्राण ब्रह्म नहीं, अपान ब्रह्म नहीं
ध्यान समाधि में नहीं आय रे ।
ब्रह्म रूप तुम जानो उसको
जो प्राणों को चलाता रे ।। ब्रह्मरूप....

मन ब्रह्म नहीं, बुद्धि ब्रह्म नहीं
करत कल्पना हारे रे ।
मन बुद्धि को जो जानत है
ब्रह्म कहावत सोय रे ।। ब्रह्मरूप....

जिस मूरत को सब जग मानत
अरु जिसे ब्रह्म बतावत रे ।
उस मूरत को ब्रह्म न जानो
केन उपनिष जनावत रे ।। ब्रह्मरूप....

कर्त्ता भाव को बिन त्यागे से
जीव भाव को बिन त्यागे से
देह भाव को बिन त्यागे से
ब्रह्म निष्ठा नहीं होय रे ।
कहे निरंजन तू ब्रह्म रूप है
छान्दोग्य बतलावे रे ॥

ब्रह्मरूप पहिचानो साधो
ब्रह्मरूप पहिचानो रे
सोऽहम् रूप पहिचानो रे ।।
शिवोऽहम् पहिचानो रे ।।

सहजानन्दी शुद्ध स्वरूपी
अविनाशी मैं आत्म स्वरूप ।
देह मरे पर मैं नहीं मरता,
अजर अमर मैं आत्मा हूँ ।।0।।

शस्त्र न छेदे न अग्नि जलावे,
कालों का महा काल हूँ मैं ।
नाम नहीं कि रूप नहीं हूँ
निराकार हूँ शुद्ध स्वरूप ।।१।।
सहजानन्दी....

पिता नहीं कि माता नहीं हूँ,
अद्वय हूँ मैं आत्म स्वरूप ।
पति नहीं कि पत्नि नहीं हूँ,
नहीं किसी का पूत्र स्वरूप ।।२।।
सहजानन्दी.....

नहीं मैं बालक नहीं मैं युवा,
वृद्ध न होता पूर्ण स्वरूप ।
नहीं मैं घटता नहीं मैं बढ़ता,
अविकारी हूँ ब्रह्म स्वरूप ।।३।।
सहजानन्दी.....

नहीं मैं कर्त्ता नहीं मैं भोक्ता,
असंग हूँ मैं साक्षी स्वरूप ।
जो है कर्त्ता सो है भर्ता,
चिदाभास वह मनःस्वरूप ।।४।।
सहजानन्दी.....

भूख प्यास नहीं लगती मुझको
यह तो है सब प्राण स्वरूप ।
नहीं मैं जाग्रत नहीं मैं स्वप्न,
नहीं सुषुप्ति तुरीया हूँ ।।५।।

सहजानन्दी.....

नहीं मैं स्थूल नहीं मैं सूक्ष्म,
कारण नहीं अकारण हूँ ।
कहे शान्ता गुरु कृपा से,
मैं तो हूँ एक ब्रह्म स्वरूप ।।६।।
सहजानन्दी.....

हर देश में तू , हर रूप में तू
तेरे नाम अनेक तु एक ही है
हर काल में तू, हर रूप में तू
तेरे नाम अनेक तु एक ही है ।0।

हर जीव में तू, हर श्वाँस में तू
जड़ चेतन रूप में तू ही तो है ।
तू कण कण में है ऐसा रमा,
जैसे चांद सूरज में ज्योति प्रभा ।
जैसे दुध की बूंद में घृत भरा,
जैसे मेहंदी के पात में ललीरमा ।।१।

जैसे मृग की नाभी में कस्तूरी है
पर (मूरख) अज्ञ से दूढंत बन बन में
तैसे सब जीवों के तू हृदय में
पर मुरख खोजत बाहर में ।२।

इस मुढता से जीव भटक रहा
लख चौरासी के चक्कर में
जब तत्त्वमसी उपदेश सुना
मै जीव हूँ यह भ्रम मिटा
अरु आवागमन का चक्र मिटा ।३।
जैसे कारण से कभी भिन्न नहीं
होता है रूप आकारों का ।
है कहता निरंजन यह जग सारा
केवल ब्रह्म का है यह नजारा
चारों वेदों का है यह पसारा ।४।

साधु उसे नहीं जानो भैया,
साधु उसे नहीं जानो रे ॥0॥

साधु नहीं जो जावे मन्दिर में,
जंगल करे बसेरा रे ।
साधु नहीं जो मूंड मुंडावे,
भस्मि अंग लगावे रे ॥१॥

साधु नहीं जो वस्त्र रंगावे,
छाप तिलक नहीं धारे रे ।
साधु नहीं जो अन्न को त्यागे,
करे फल दुग्ध आहारा रे ॥२॥

साधु नहीं जो भीख मांगता,
गांजा चरस उड़ावे रे ।
साधु नहीं जो सिद्धि दिखावे,
भूत भविष्य बतावे रे ॥३॥

साधु नहीं जो गृह त्याग करावे,
ब्रह्म को दूर बतावे रे ।
कहे निरंजन सोई है साधु,
आतम रूप लखावे रे ॥४॥

पीछे वाले आओ सब आगे बढ़े,
बढ़ गये आगे तो पीछे क्यों हटे ।0 ।।

गम से बेगम कर दिया क्या मोज है
मोज में रचले जगत और लय करें... बढ़गये

आपका संग करके मल सब धुल गया,
नहा के गंगा यमुना में हम क्या करें... बढ़गये

निजको जाना होगये अब वेफिक्र
स्वतःही सब कारज बने हम क्या करें...बढ़गये

करा के अनुभव शास्त्रों से मिला दिया,
शंका फिर कोई उठाया क्यों करें... बढ़गये

ब्रह्म में रमन करना हमें अब आगया,
उससे ज्यादा और हम अब क्या करें...बढ़गये

जाग जाग इन्सान जाग तुझे आये संत जगाने ।
प्रभु के प्रेम की बाती लेकर ज्ञान का दीप जलाने ।0।

दर्शन संतों का हुआ आज भाग है जागे,
शीतल मन ये हो गया सब दुःख दर्द है भागे ।
आये है प्रभु आज जीवों पर अमृत बरसाने ।१।
... प्रभु ।

भवसागर में नाव यह डगमग तेरी डोले,
जाना है गर पार तो साथ गुरु को लेले ।
हाथ पकड़ कर आज ये नैया तेरी पार लगाने ।२।
... प्रभु ।

लूटसके तो लूट ले वह आवाज लगाये,
मोती ये हरि नाम के गुरुदेव लरायें ।
पड़ा था भूला मालिक को उसकी याद दिलाने ।३।
... प्रभु ।

नारद साध सों अन्तर नाहीं ।
जो कोई साध सों अन्तर राखे, सो नर नरके जाहिं ।।

जागे साध तो मैं हूँ जागूँ, सोवे साध तो सोऊं ।
जो कोई मेरे साध दुःखावे, जड़ा मूलसे खोऊं ।।

जहाँ साध मेरा यशको गावे, तहाँ करूँ मैं वासा ।
साध चले आगे उठ धाऊं, मोहि साध की आसा ।।

माया मेरी अर्ध शरीरी, ओ भक्तन की दासी ।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी ।।

अन्तर ध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई ।
कहे कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुखगाई ।।

ऐसा आतम रूप हमारा,
ऐसा आतम रूप रे ।।0।।

एक अखण्ड जो अविनाशी,
पूरण सब घट वासी रे ।
स्वयं प्रकाशी सब सुख राशी,
नहिं बद्री अरु काशी रे ।।१।।

पवन, पानी, नहीं, शस्त्रों से मरता,
अग्नि नहीं जलाता रे ।
अनादि अनन्त जग आधारा,
ऐसा वेद बताता रे ।।२।।

बाहर भीतर जो भर पूरां,
निकट नहीं कि दूरा रे ।
पुण्य पाप अरु सुख दुःख नाहीं,
जानत् सतगुरु पूरा रे ।।३।।

बन्ध मोक्ष नहीं कछु जाके,
सब भ्रान्ति से न्यारा रे ।
कहे निरन्जन सतगुरु मेरा,
मन वाणी के पारा रे ।।४।।

अद्भूत रूप तुम्हारा साधो,
अद्भूत रूप तुम्हारा रे ॥0॥

तन तो पंच भूत का जड़ है,
तू चेतन आकारा रे ।
तीन शरीर का तू है द्रष्टा
तीन अवस्था से न्यारा रे ॥१॥

तू साक्षी एक रस आतम,
है अचल अपारा रे ।
मन, बुद्धि, इन्द्रिय अरू प्राण,
है चपल जड़ सारा रे ॥२॥

तन सुन्दर मन्दिर का है,
तू ही एक सहारा रे ।
वही स्वरूप 'निरन्जन' तेरा,
तू जग का आधारा रे ॥३॥

चेतन आतम राम है साधो,
चेतन आतम राम रे ॥0॥

पांच तत्त्व का यह तन पिंजरा,
जीव इसीसे न्यारा रे ।
यह तन तो जान सके नहीं,
मिथ्या मलिन असारा रे ॥१॥

तन को अपना रूप लखे सो,
है चाण्डाल चमारा रे ।
ब्रह्म रूप जो निज को जाने,
सो है ब्राह्मण प्यारा रे ॥२॥

मन मन्दिर जो देव विराजे,
सोई राम विचारा रे ।
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया,
साक्षी एक आधारा रे ॥३॥

मनकी वृत्ति क्षण-क्षण पलटे,
देखते आतम सारा रे ।
कहे 'निरन्जन' तत्त्वमसि सुन,
सोऽहम् रूप निहारा रे ॥४॥

निज आतम परमात्म जानो,
निज आतम परमात्म रे ॥0॥

तीन गुणों अरु पंच भूत से,
है आतम अतीत रे ।
पुण्य पाप अरू हर्ष शोक नहीं,
राग द्वेष नहिं भीत रे ॥१॥

चिद जड़ जीव ईश नहीं जामे,
मात पिता नहीं सूत रे ।
एक दोय अरु द्रष्टा दृश्य नहीं,
नहीं कोउ बैरी मीत रे ॥२॥

ऊंच नीच शाप-वर नाहीं,
द्वन्द से रहे अतीत रे ।
स्थूल सूक्ष्म तन मन वाणी,
नहीं मन बुद्धि चित्त रे ॥३॥

निराकार उसे वेद बतावे,
श्वेत श्याम नहीं पीत रे ।
कहे 'निरन्जन' ताहि को सुमिरो,
सोऽहम् रूप पुनीत रे ॥४॥

परम ब्रह्म हो तुम तो भैया
परम ब्रह्म हो तुमतो रे ।।0।।

तेरा आतम तुझमें बसता,
ढूँढन क्यों तू जाता रे ।
घर की वस्तु घर में ही पावे,
और कहीं नहीं पाता रे ।।१।।

जिसे मिलने की आशा करता,
सो नित तुझमें रहता रे ।
'तत्त्वमसि' यह वेद घोषणा,
काहे तू नहीं सुनता रे ।।२।।

आतम बिना खाली नहीं कोई,
व्यापक रूप कहाता रे ।
लोग जिसे है दूर बतावत,
'निरंजन' स्वरूप बताता रे ।।३।।

आत्मा हूँ आत्मा मैं आत्मा,
नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त व्यापक आत्मा ।।टेक।।

शस्त्र से काटो तो मैं कटता नहीं ।
तीर से छेदो तो मैं छिदता नहीं ।।
अग्नि से जलता नहीं मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

सूखता मैं वायु के झोकों से नहीं ।
यदि गलाये जल तो मैं गलता नहीं ।।
हूँ अखण्ड निर्विकारी मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

चर्मचक्षु से कभी दिखता नहीं ।
मूर्ख नर अज्ञान वश जाने नहीं ।।
ज्ञानियों की दृष्टि में मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

क्रोध और कामादि से मैं भिन्न हूँ ।
लोभ और रागादिसे परिच्छिन्न हूँ ।।
भेद भावों से रहित मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

गोरा काला दिखता जो यह चाम है ।
मोटा पतला होना इसका काम है ।।
आवागमन से रहित मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

सूर्यवत स्वयं प्रकाशी हूँ सदा ।
मात्र ज्ञाता और द्रष्टा हूँ सदा ।।
है शांत शीतल शुद्ध निर्मल आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

जीव ये अज्ञान से है रो रहा ।
पाप का बोझा सिर पर ढो रहा ।।
कर्ता हूँ न, भोक्ता हूँ न, मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

भूलकर मैं आपको अज्ञान से दुःख पा रहा ।
देह अध्यास कर अनादि से है भटक रहा ।।
एक मेवाऽदितीयं ब्रह्म हूँ मैं आत्मा ।। नित्य शुद्ध ।।

सत्य स्वरूप पहचानो साधो
सत्य स्वरूप पहचानो रे ॥0॥

तीन काल में नाश न होवे,
वही सत्य कहावे रे ।
नहीं रहे जो सदा एक रस,
जग मिथ्या बतलावे रे ॥१॥

चित्र माहि चित लाओ नाहीं,
रज्जु ही सर्प लखावे रे ।
चित्र वृक्ष फल देवत नाहीं,
चित्र का सर्प न खावे रे ॥२॥

चित्र फल न भूख मिटावे,
न अग्नि जलावे रे ।
चित्र सूर्य नहीं तमको मिटावे,
नहीं अन्न उपजावे रे ॥३॥

चित्र मूर्ति में जो मोहित है,
जन्म मरण दुःख पावे रे ।
कहे 'निरन्जन' चित्र छोड़कर
चेतन मुक्ति दिलावे रे ॥४॥

स्वामी निरन्जन ने हमको बताया,
द्रष्टा साक्षी तत्त्वमसि प्रेमसे सिखाया ।। टेक ।।

शुद्ध बुद्ध मुक्त तू है सदा निर्विकारी,
अजन्मा अविनाशी तू है सर्वाधारी ।
देह अभिमान कर बहुत दुःख पाया...द्रष्टा

पंचकोषातीत तू है साक्षी निराकार,
अस्ति भाति प्रिय तू है नामरूप माया ।
सत चित आनन्द यजुर्वेद दर्शाया ... द्रष्टा

चिन्मय सदा तू उपाधि से न्यारा,
स्वयं सिद्ध स्वयं प्रकाश रूप है तुम्हारा ।
अहं मम अरू त्वम् का कर तू सफाया...द्रष्टा

तीन अवस्था तीन गुण से न्यारा,
चौदह त्रिपुटियों में प्रकाश है तुम्हारा ।
द्रष्टा दृश्य दर्शन में तू ही समाया ...द्रष्टा

आतम तुम साक्षात् स्वयं हो,
आतम तुम साक्षात रे ।

निज सत्ता से सब जग भासे,
सचराचर समुदाय रे ।
तीरथ मंन्दिर कर्मधर्म में,
मूरख मन ललचाय रे ॥१॥

आत्मा अद्वय द्वितीय नहीं है,
किसका करो तुम ध्यान रे ।
ज्ञाता ज्ञेय द्वैत में भासे,
ब्रह्म सर्वत्र समान रे ॥२॥

नित्य प्राप्त स्वरूप तुम्हारा,
प्राप्ति नाश कहाय रे ।
'निरन्जन' कोई ढुँढ सके नहीं,
जो आतम सदाय रे ॥३॥

अमृत बेला उठ जिज्ञासु,
आतम का नित ध्यान धरो ।।0 ।।

गंगा यमुना काशी आदिक,
जग में तीर्थ जेते हैं ।
आतम सम ना तीरथ कोई,
तामें नित स्नान करो ।।१ ।।

इन्द्र लोक रवि चन्द्र लोक लौ,
लोक ब्रह्मादि जेते हैं ।
आतम जैसा लोक न कोई,
ता में नित ठहरान करो ।।२ ।।
शब्द स्पर्श रूप रसादि,
विषयों के रस जेते हैं ।
आतम के सम रस न कोई,
ताका नित ही पान करो ।।३ ।।

कहे 'निरन्जन' ब्रह्मा विष्णु,
आदि देवता जेते हैं ।
आतम जैसा देव न कोई,
ताका सोऽहम् ध्यान करो ।।४ ।।

चेतन रूप तुम्हारा भैया,
चेतन रूप तुम्हारा रे ।।0।।

तेरा कारण सत चेतन है,
वेद में यही उच्चारा रे ।
कारण कार्य एक रूप ज्यों,
माटी घट विस्तारा रे ।।१।।

चेतन में तू कल्पित है,
शास्त्रों का विचारा रे ।
कल्पित की नहीं पृथक सत्ता,
रजत शुक्ति आकाश रे ।।२।।

चेतन अरू तेरी एक जाति,
ज्यों अग्नि चिन्गारा रे ।
समजाती का सहज अभेदा,
समझो यह निर्धारा रे ।।३।।

द्वैत में भय को वेद कहत है,
दुःख सहत सिर भारा रे ।
कहे 'निरन्जन' ब्रह्मज्ञान से,
छोड़ो भेद विकारा रे ।।४।।

अपना आप पहचानो भैया,
अपना आप पहचानो रे ।।0।।

गो गोचर जहँ लगि मन जावे,
माया किया पसारा रे ।
आप पहचाने हरि को जाने,
सद्गुरु लेव सहारा रे ।।१।।

अखण्ड रूप हरि को तुम जानो,
आतम भिन्न असारा रे ।
हरि को जाने मोक्ष नहीं पावे,
आतम ज्ञान से पारा रे ।।२।।

अनादिकाल से देह भाव धर,
पाया कष्ट अपारा रे ।
'निरन्जन' गुरु कृपा से जाना,
आतम रूप हमारा रे ।।३।।

निज स्वरूप पहचानो भैया,
निज स्वरूप पहचानो रे ।।0।।

भूख प्यास है धर्म प्राण के,
सुख दुःख मन के जान रे ।
अहं धर्म बुद्धि का जानो,
ज्ञानेन्द्रिय पंच जान रे ।।१।।

जन्म मरण और घटना बढ़ना,
धर्म देह के मान रे ।
कर्म करन की पांच इन्द्रियाँ
कर्ता जीव को जान रे ।।२।।

जो है कर्ता वह है भोक्ता,
अपने में नहीं मान रे ।
साक्षी भाव 'निरन्जन' जिसको
मुक्त उसे पहचान रे ।।३।।

अपने को पहचान बावरे,
अपने को पहचान रे ।।0।।

अपने को जाने बिन मावन,
होता पशु समान रे ।
गुरु से करले ज्ञान आपना
पावे पद निर्वाण रे ।।१।।

आतम छोड़ अनातम पूजे,
देव पशु ले मान रे ।
अखण्ड आतम उसको जानो,
जो सर्वत्र समान रे ।।२।।

ब्रह्म रूप यह सर्व जगत है,
जाने कोइ बुद्धिमान रे ।
कहे 'निरन्जन' सो तू आतम,
मत कर देह अभिमान रे ।।३।।

देह मन्दिर में हरि बिराजे,
ताका तुम दीदार करो ।।0 ।।

परम मनोहर हरि मन्दिर यह
नितही तेरे साथ रहे ।
दूर जाने की नहीं जरूरत,
इस पर ही विश्वास करो ।।१ ।।

अपने रहने कारण हरिने,
किया सुन्दर मन्दिर यह ।
चौरासी में मन्दिर ऐसा,
और नहीं विचार करो ।।२ ।।

मानुष तन ही हरि मन्दिर है,
महिमा जाकी वेद कहे ।
चार पुरूषार्थ का यह घर है,
तासे तुम निस्तार करो ।।३ ।।

कहे 'निरन्जन' सुख जो चाहो,
तन मन्दिर में हरिको देखो
तन मन धन से सेवा करके,
हरि से ही नित प्यार करो ।।४ ।।

देह मन्दिर में हरि को जानो,
देह मन्दिर में हरि को रे ।।0।।

जड़ मन्दिर को पूजे पुजारी,
मन मन्दिर त्रिपुरारी रे ।
आत्म छोड़ पाषाण को पूजे,
हरि मन्दिर दे गारी रे ।।१।।

गंगा यमुना करले तीरथ,
पाठ पूजा करे सारी रे ।
देह अभिमान से कर्म किया तो,
पाप किया तूने भारी रे ।।२।।

मन वच कर्म से जीव को पूजे,
होय प्रसन्न मुरारी रे ।
कहे 'निरन्जन' यह प्रभु पूजा
मन में लये विचारी रे ।।३।।

देह मन्दिर में खोजो प्यारे,
देह मन्दिर में खोजो रे ।।0।।

देह मन्दिर में देव विराजे,
उसके बनो पुजारी रे ।
देव सबहि जिसको पूजत है,
महादेव वह भारी रे ।।१।।

आत्म देव के पूजन बिन,
मुक्ति न होय तुम्हारी रे ।
पूजन की बिधी सद्गुरु देते,
जीवन लेव सुधारी रे ।।२।।

मन वच कर्म से नहिं सताना,
शत्रुभाव बिसारी रे ।
कहे 'निरन्जन' ज्ञान चक्षु से,
सर्वत्र ब्रह्म निहारी रे ।।३।।

घट ही में अविनाशी साधो,
घट ही में अविनाशी रे ।।टेक।।

काहेरे तुम मथुरा जावो,
काहे धावो काशी रे ।
मन के साक्षी रूप है आतम
जो सचराचर वासी रे ।।१।।

नहीं पाताल नहीं स्वर्ग लोकमें,
नहीं सागर जल राशि रे ।
जो जन सत्संग करत निरन्तर,
सदा लखे निज पासी रे ।।२।।

जो तुम उसको देखन चाहो,
सब से होय उदासी रे ।
बैठ एकान्त ध्यान नित कीजे,
होय जोत प्रकाशी रे ।।३।।

आतम का जब निश्चय होवे,
सकल मोह तम नाशी रे ।
कहे निरन्जन मोक्ष पद पावे
कटे जन्म की फांसी रे ।।४।।

ब्रह्मलोक में देव बिराजे,
ब्रह्मलोक में देव रे ।।0।।

ब्रह्मलोक यह मानुष तन है,
वेद दिया बताय रे ।
साधन धाम मुक्ति का द्वार है,
सभी संत समुझाय रे ।।१।।

लख चौरासी योनि अन्दर,
मुक्ति कहुँ न पाय रे ।
देव योनि भी मानुष तनकी,
आस करे सदाय रे ।।२।।

ब्रह्म अहं मैं, अहं ब्रह्म मैं,
यही ज्ञान कहाय रे ।
ऐसे ज्ञान को पाने हित जो,
गुरु शरण जब जाय रे ।।३।।

कहे 'निरन्जन' जिस मानव ते,
स्वरूप दर्शन कर पाय रे ।
धन धन जीवन हो उसका जब,
गुरु होय सहाय रे ।।४।।

तत्त्व तलासो तन में प्यारे,
तत्त्व तलासो तन में रे ।

घर द्वार का त्यागहि करके,
क्यों भटकत है बनमें रे ।
कंद मूल फल जल ही खावत,
कौन दोष है अन्न में रे ।। तत्त्व ।।

सभा समिति में नहीं मिलही,
मिले नहीं 'निरन्जन' में रे ।
तप तीरथ व्रत से नहिं मिलही,
मिले नहीं जन धन में रे ।। तत्त्व ।।

जैसे स्तन में दुग्ध रहत है,
नीर रहत ज्युं घन में रे ।
दास गरीब त्युं देव निरन्जन,
रहत सदा सब जन में रे ।। तत्त्व ।।

तन में ही अविनाशी भैया,
तनही में अविनाशी रे ।

काहे रे तू मथुरा जावे,
काहे जावे तू काशी रे ।
नहीं पाताल अरू स्वर्ग लोक में,
नहीं खोजो जलराशि रे ।।१।।

जो तुम उसको पाना चाहो,
सब से होय उदासी रे ।
अधिकारी हो रहो गुरु शरणे,
करदे ज्ञान प्रकाशी रे ।।२।।

मन के पीछे बसे निरन्जन,
जो सचराचर वासी रे ।
जो जन सोऽहम् सुमिरन करते,
सदा रहे तिन पासी रे ।।३।।

मैं को जब परमातम जाना,
गया अहं-मम नासी रे ।
वही 'निरन्जन' मोक्ष पद पावे,
मिटे जन्म की फांसी रे ।।४।।

हमारा साधु देश दिवाना खासा
नहीं जहाँ रैन प्रकाश ।। टेक ।।

सोहम् सोहम् जपुं नहीं अजपा,
नहीं श्वाँस उच्छांश ।
नेति धोति षट क्रिया न साधूं,
नहीं अष्ट जोग का त्रास ।।१ ।।

सुमरण ध्यान नहीं मुद्राश्रम,
सहजा ही पायो वास ।
अधर अमाप अलोकी तकिया,
नहीं धरण आकाश ।।२ ।।

नहीं बन्ध नहीं मुक्ति अभिलाषा,
नहीं जन्म नहीं नाश ।
निरन्जन सद्गुरु से मिल अबतो,
काटो भव बन्धन फांस ।।३ ।।

चलो आपने घर को भैया
चलो आपने घर को रे ।।0।।

जब लग अपना घर नहीं पावे,
तब लग पावे डर को रे ।
मैं हूँ कौन कहाँ को जाना,
खबर नहीं नर खर को रे ।।१।।

अपने घर की राह न सूझत,
अन्य को राह बतावे रे ।
अपने घरकी वस्तु न जानत,
पर घर बात बतावत रे ।।२।।

अपने को नहीं आप पिछाने,
औरों के कुल नाम सुनावे रे ।
कहे 'निरन्जन' आत्म विमुख को,
कबहूं न शान्ति आवे रे ।।३।।

चलो आपने घर को प्यारे,
चलो आपने घर को रे ।।0।।

जब लग अपना घर नहीं पावे,
तब लग पावे डर को रे ।
दीन होइ के देवन आगे,
जोरत है द्वै कर को रे ।।१।।

चार धाम तीरथ में फिर के,
खोवत जीवन धन को रे ।
सुख स्वरूप है आतम अपना,
खबर नहिं नर खर को रे ।।२।।

आपहि आतम रूप सनातन,
पूजत है जाई परको रे ।
दास गरीब तू चैतन्य हो के,
याचन क्यों जाई जड़ को रे ।।३।।

भूल गये निज घर को पगले,
भूल गये निज घर को रे ।।0।।

कोउक पूजत है जल थल को,
कोउक पूजन मूरत को रे ।
जंगम होके जड़ को पूजत,
जोरत जहँ जहँ करको रे ।।१।।

धाम पुरी अरु अडसठ तीरथ,
भटकत है हरदम को रे ।
मैं हूँ कौन कहाँ से आया,
खबर नहीं नर खरको रे ।।२।।

दीन हीन बलहीन बावले,
चाहत योवन धन को रे ।
दास गरीब कूपन के कीड़े,
क्या जाने सरोवर को रे ।।३।।

अपने को नहीं जाना पगले,
अपने को नहीं जाना रे ।।0 ।।

मैं हूँ कौन कहाँ से आया,
कौन देश फिर जाना रे।
देह असत जड़ दुःख रूप को,
अपना करके माना रे ।।१ ।।

अहं भाव यह तन में करके,
मूरख मर्म न जाना रे ।
श्वान सूकर सम भोग ही भोगे,
तबहुं नहीं अघाना रे ।।२ ।।

यह उत्तम नर तन पाकर के,
भोग राग भरमाना रे ।
दास गरीब अब दाव पड़ा है,
फिर नहीं ठौर ठिकाना रे ।।३ ।।

अचरज बात कहावे साधो,
अचरज बात कहावे रे ।।0।।

आतम देव बसे हृदय में,
ढूंढत ढोल बजाई रे ।
बिन जाने नर होत हैराने,
गुरु बिन गम न पाई रे ।।१।।

जिन सत्ता से सब जग भासे,
सचराचर समुदाई रे ।
सो चेतन जड़ को जा मांगे,
दास भाव दरशाई रे ।।२।।

राग –द्वेष अरु हर्ष–शोक ये,
मन के दोष कहाई रे ।
जन्म मरण ये धर्म देह के,
आतम में अपनाई रे ।।३।।

वेद शास्त्र अरु संत पुकारे,
तत्त्वमसि पद गाई रे ।
दास गरीब तद्यपि नहीं जावे,
भेद भ्रान्ति भाई रे ।।४।।

साधो ! आप एक जग माही जी ।

दूजा भ्रम स्वप्न सम जानो,
ज्यों दर्पण में छाई जी ।

स्वप्न नगर को कल्पित जानो,
स्वप्न साक्षी है सत्य जी ।।

जैसे जलहिम फेन तरंगे ,
है जल वस्तु अभिन्न जी ।

चुड़ी चैन अंगूठी पायल,
नहीं स्वर्ण से भिन्न जी ।।

अधिष्ठान से अध्यस्त वस्तु,
होती नहीं कभी भिन्न जी ।

अध्यस्त मात्र कल्पना जानो,
ज्यों रस्सी में सर्प जी ।।

कल्पित सर्प से हानि न होवे,
क्यों उसे मारन जावो जी ।

अधिष्ठान रस्सी के दिखते,
अध्यस्त सर्प नसावत जी ।।

सब खिलोना खांड़में भासे,
खांड़ खिलोना माही जी ।

कहत निरंज्जन ब्रह्म जगत में,
जगत ब्रह्म के माही जी ।।

जरा जीव यह तो विचारो मन में
तुझ आत्मा का कैसा रूप है ।
यह देह नहीं है, तू आत्मा
तू तो सत् चित् आनन्द रूप है ॥

घट पट का द्रष्टा, घट पट से न्यारा
तिन देह का द्रष्टा, तिन देह से न्यारा ।
तू तो साक्षी चेतन ब्रह्म रूप है,
तू ता अजर अमर बिन रूप है ॥
यह देह नहीं....

घट पट का द्रष्टा, घट पट से न्यारा
तिन देह का द्रष्टा, तिन देह से न्यारा ।
तू तो साक्षी चेतन ब्रह्म रूप है,
तू ता अजर अमर बिन रूप है ॥
यह देह नहीं....

घट उपाधि से आकाश ज्यों,
घटाकाश कहलाये हैं ।
अन्तःकरण उपाधि से त्यों,
जीव ब्रह्म कहलाये हैं ॥
यह देह नहीं....

आतम देव बसे हृदय में अज्ञानी कैसे जाने रे ।।0 ।।

शोक मोह अरु काम क्रोध भय
आकाश धर्म कहावे रे ।
घटना, बढ़ना, उठना, चलना
धावन वायु बतावे रे ।।१।।

तृषा, कान्ति अरु आलस निद्रा,
क्षुधा, तेज कहलावे रे ।
रज वीर्य अरु लार पसीना
मूत्र जल बनावे रे ।।२।।

त्वचा मांस अरु नाड़ी लोम
भूमि हाड़ बनावे रे
तू आतम इस देह से न्यारा,
ज्यों घट द्रष्टा घट से रे ।।३।।

देहाभिमानी धान समान है,
ज्ञानी, को चावल जानो रे ।
देहाभिमानी जन्मता मरता,
ज्ञानी मुक्ति को पाता रे ।।४।।

मैं से मेरा पृथक रहत है
ज्यो घट द्रष्टा घट से रे
देह का द्रष्टा देह से न्यारा
निरंजन स्वरूप बतावे रे ।।५।।

तत्त्व को खोजो निजमे साधो
तत्त्व को खोजो निज में रे ।0 ।।

नाम रूप अरु जाति आश्रम,
सम्बन्ध परिणाम मृत्यु रे ।
ये सप्त चिन्ता का तू है द्रष्टा,
ऐसा वेद बतावे रे ।।१।।

जन्मना रहना अरु बढ़ना घटना
युवा वृद्ध हो मरना रे ।
षड्विकार तुम देह के जानो,
आतम तुम अविकारी रे ।।२।।

पंचभूत पच्चीस तत्त्वों का
अधम शरीर बतावे रे ।
व्यक्ति रूप नहीं तुम साधो
साक्षी रूप पहिचानो रे ।।३।।

तू द्रष्टा इस देह से न्यारा
यह सतगुरु बतलावे रे ।
नेतिनेति कह वेद बतलावे,
निरंजन प्रकट जनावे रे ।।४।।

ब्रह्म की चर्चा है अमृत
गुप्त थी बहु काल से ।
निरंजन लुटाये जा रहा,
शहर, गांव कुछ काल से ॥0॥

साधन सम्पन्न जो पान करत है,
धन्य धन्य हो जाय है ।
जीवनमुक्ति प्राप्त कर,
कृत्य कृत्य हो जाय है ॥१॥

ब्रह्म स्वरूप स्वयं होकर भी,
अज्ञानी नहीं जान पाये रे ।
देह भाव करने से जीव का,
ब्रह्म भाव छिप जाय हैं ॥२॥

उठते-बैठते, सोत-जागते,
जब पिवे और खाय हैं ।
नित्य सोऽहम् चिन्तन से,
देह भाव गल जाय हैं ॥३॥

कर्त्ता न बन, भोक्ता न बन,
तज मूढ़ देहाभिमान रे ।
मत जन्म ले मत मृत्यु रे
कर नित्य ब्रह्माभ्यास रे ॥४॥
ज्ञान बिना नहीं अज्ञान जावे,
वेद वचन तू मान रे
गुरु चरण में जाकर भईया,
कर तत्काल कल्याण रे ॥५॥

सुख आते हैं दुःख आते हैं
दिन होता है ढल जाता है ।
इस धुप छाँव के खेल में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।0।।

सुख आते हैं दुःख आते हैं
दिन होता है ढल जाता है ।
इस आते जाते सुख दुःख में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।१।।

कभी मान मिला मन खुस हुआ
अपमान मिला मन रो लिया
इस मान अपमान के खेल में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।२।।

कभी प्यार मिला मन फुल गया
कभी डांट मिली मन रूठ गया
इस डांट प्यार की खेल में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।३।।

कभी कर्ता बना कभी भोक्ता बना
कभी पुण्य किया कभी पाप किया
इस पुण्य–पाप मनोधर्म के
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।४।।

कोई पैदा हुआ कोई मर जाता
कोई आता है कोई जाता है
इस जन्म मरण के खेल में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।५।।

कभी काम जगे कभी क्रोध उठे
कभी ज्ञान करे कभी शान्त रहे
इस मन के चंचल शान्त में
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।६।।

कोई जीव कहे, कोई ब्रह्म कहे
कोई बद्ध कहे, कोई मुक्त कहे
इस जीव–ब्रह्म के बन्ध में हम
हम साक्षी रहते हैं, हम मस्त रहते हैं
हम द्रष्टा रहते हैं, हम मस्त रहते हैं ।।७।।

परमातम व्यक्ति मत जानो
शक्ति रूप है सोये रे ।
अनूभव स्वरूप है आतम अपना
दर्शन हित मत रोयरे ॥०॥

रूप दर्शन करत सकल जग,
शक्ति दर्शन नहीं होय रे ।
अर्जुन जिस कृष्ण को देखत,
अविनाशी नहीं सोय रे ॥१॥

जिसका जन्म जगत है मानत
मृत्यु निश्चित् होय रे ।
जनम मरण होवे हैं जिसका,
परमातम नहीं सोय रे ॥२॥

निज आतम परमातम जानो
क्यों पत्थर आगे रोय रे ।
अज्ञान से उसे भिन्न समझकर
दुर्लभ जीवन क्यों खोय रे ॥३॥

जीव भाव के बिन त्यगे से
मुक्ति कबहुँ नहीं होय रे ।
गुरु समर्पित हो जा भैया,
टूटे बन्धन तोय रे ॥४॥
उठ खड़ा हो क्यों अलसावत्
काहे अब तु सोये रे ।
गुरु समर्पित हो निरंजन
टूटे बन्धन तोय रे ॥५॥

एक वृक्ष पर दो है पक्षी, सदा संग वे रहते है ।
उस वृक्ष पर दो फल लगते, कोई मिठा कोई पीता है ।

उन पक्षी का स्वभाव जानो
एक देख एक खाता है ।
एक अचल है रहता संग में
दूजा वनवन फिरता है ।१।

अचल सदा आनन्द से जीता
जो खाता दुःख पाता है ।
इसी देह पर वे दो पक्षी
ब्रह्म जीव कहलाया है ।२।

कर्ता–भोक्ता जीव पक्षी है,
दूजा साक्षी बताया है ।
साक्षी अचल देखता रहता
जीव चौरासि फसाया रे ।३।

विम्ब रूप ब्रह्म को जानो
प्रतिविम्ब जीव कहाया रे
विम्ब ब्रह्म को सत्य जानो
मिथ्या जीव बताया है ।४।

विम्ब प्रतिविम्ब में भेद न मानो,
भेद में भय जनाय है ।
कहे निरंजन तत्त्वमसि यह
श्वेतकेतु को शिखाया है ।५।

कि साक्षी भाव में हरदम रहना रहना
सतगुरु का यही कहना–कहना ।।0।।

मिठा–मिठा, सबसे बोलना
प्रेम रस बोलों से मुख खोलना
कि कटु वचन को तुम सहना–सहना
किसी पर तुम क्रोध न करना–करना
सतगुरु का यही कहना–कहना ।
कि साक्षी भाव में ....।१।

सुख–दुःखों को, लाभ–हानि को
तुम सहते रहना, न किसी से कहना
निंदा–स्तुति में तुम सम रहना
निज समान सब को तुम देखना
सतगुरु का यही कहना–कहना
कि साक्षी भाव में ....।२।

सहनशीलता, सदभावना
भरदो हममे गुरुवर से कहना
कि नम्रता का हम पहने गहना–गहना
कि लोक वासना से वचके रहना–रहना
सतगुरु का यही कहना–कहना
कि साक्षी भाव में ....।३।

अपना पराया, राग–द्वैषता
मन में आये न मेरी प्रार्थना ।
नाम–जाति मेरे मन में भाएना
द्वैत भाव में मन मेरा जाएना
गुरुवर का यही कहना–कहना
कि साक्षी भाव में ....।४।

मन में कर्ताभाव, कभी आए ना
साक्षी भाव कभी मन से भूलेना
कि देह में फंसके चौरासी जाएना
जीव भाव में रह सोऽहम् भूलेना ।
निरंजन का यही है कहना–कहना
कि साक्षी भाव में ....।५।

यम निमय संयम आप कियो, पुनि त्याग विराग अथाग लह्यो
वनवास लियो मुख मौन रह्यो, दृढ आसन पक्ष लगाय दियो
मन पौन निरोध कियो बहुकाल, हठयोग प्रयोग सुतार लियो ।
जप भेद तप त्यौहि तपे उरसे हि उदासी लहि सबपै ।।

सब शास्त्रन के नय धारीहिये, मतखंडन मंडन भेद लिये ।
वह साधन बार अनन्त कियो, तदपि कछु हाथ हजु न परयो ।।
अब क्यों न विचारत है मन से, कछु ओर रहा उन साधन से ।
बिन सद्गुरु कोई न भेद लहे, मुख आगल है वह बात कहे ।।

करुणा हम पावत है तुमकी, वह बात रही सद्गुरु गमकी ।
पल में प्रगटे मुख आगल, जब सद्गुरु चरण न सुँ प्रेमबसे ।।
तनसे, मनसे, धनसे सबसे, गुरुदेव की आन स्वात्म बने ।
तब कारज सिद्ध बने अपनो, रसअमृत पावहि प्रेमघनो ।।

वह सत्य सुधा दर्शावहिंगे, चतुरांगल है दृगसे मिलिहे ।
रस देव निरंजन को पिव ही, गहि जोग जुगो जुग सो जीवहि ।।
पर प्रेम प्रवाह बढ़े प्रभु से, सब आगम भेद सु उर बसे ।
वह केवल को बीज ग्यानि कहे, निजको अनुभव बतलाय दियो ।।

कैसे जग उपजाया ईश्वर
कैसे जग उपजाया रे ।
शशो शृंग को धनुष बनाकर,
बन्ध्या सुत मरवाया रे ।।0।।

घट सरावा बर्तन सबहि,
ज्युँ कुलाल बनाया रे ।
नाम रूप को बाध किये से,
मूल मिट्टी इक पाया रे ।।१।।

तन्तु में रह कपड़ा जैसे,
लोह में शस्त्र समाया रे ।
कंचन में आभूषण जैसे,
नाम रूप कल्पाया रे ।।२।।

अनीवर्चनीय इन्द्र धनुष को,
कहो कौन बनवाया रे ।
और कहो यह मरुभूमि में,
सरोवर कहाँ से आया रे ।।३।।

गगन कमल की माल गुरु को,
बन्ध्या सुत पहनाया रे ।
दास गरीब यह सबै कल्पना,
ऐसे हि जग उपजाया रे ।।४।।

सन्तो ! देखत जग बौराना ।
सांच कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना ।।

नेमी देखा धर्मी देखा, प्रात करे अस्नाना ।
आतम छाड़ि पाषाणहि पूजे, उनमें किछउ न ज्ञाना ।।

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितेब पुराना ।
कै मुरीद तदबीर बतावै, उनमें उहे जो ज्ञाना ।।

आसन मारि डिम्भ धरि बैठे, मनमें बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ-बरत भुलाना ।।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावत झूले, आतम खबरि न जाना ।।

हिन्दु कहे मोहि राम पियारा, तुरूक कहे रहिमाना ।
आपस में दोउ लड़त मरत है, मरम न काहू जाना ।।

घर घर मन्त्र देत फिरत है, मन में करि अभिमाना ।
गुरु सहित शिष्य सब बूढ़े, अन्त कालि पछताना ।।

कहहि कबीर सुनो हो सन्ते, इ सब भरम भुलाना ।
केतिक कहौं कहा नहीं माने, सहजे सहज समाना ।।

आप एक जग माँही साधो,
आप एक जग माँही रे ।।0।।

तुझ बिन दूजा और न कोई,
तेरा तुझे प्रणाम रे ।
आदि मध्य अरु अन्त भी तू है,
तू है पूरण धाम रे ।।१।।

देश काल का छेद नहीं है,
तू है अखण्ड अपारा रे ।
द्वैत होय तो देख सके तुझे,
तू आतम आकार रे ।।२।।

एक दोय से तू है न्यारा,
मन वाणी के पारा रे ।
कहे 'निरन्जन' कहत बने नहीं
अदभूत अगम अपारा रे ।।३।।

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नातारे

माता कहे यह पुत्र हमारा, बहन कहे बीर मेरा ।
भाई कहे यह भुजा हमारी, नारी कहे नर मेरा ।।१।।

स्वारथ का सब कुटुम्ब परिवारा, है सत्य वेद का नारा ।
जब मौत ने आकर उसे पुकारा, छोड़ चला घर द्वारा ।।२।।

अब पेट पकड़कर माता रोवे, बाँह पकड़ कर भाई ।
लपटि झपटि के तिरिया रोवे, हंस अकेला जाई ।।३।।

जब लग जीवे माता रोवे, बहन रोवे दस मासा रे ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फेर करे घर बासा रे ।।४।।

चार जने चरगजी मंगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगादी, फूंक दिया जैसे होरी ।।५।।

हाड जले जैसे जंगल लाकड़ी रे, केश जले जैसे घासा
सोना ऐसी काया जलरही, कोई न आवे पासा ।।६।।

झूठे मोह ममता में मूरख, बन्धा चौरासी पाशा ।
कहे कबीर अब सुनो निरंजन, छोड़ो जगकी आशा ।।७।।

इसतन को दुःख रूप ही जानो,
इसतन को दुःख रूप रे ।।0।।

माता पिता के रज वीर्य से,
प्रत्यक्ष यह उपजाया रे ।
इसी हेतु गुरु शास्त्र ने,
देह अधम बतलाया रे ।।१।।

पल पल पलटत जाय शरीरा,
मरणधर्मी इसे पाया रे ।
यह तन पंच भूत का पिन्जरा,
जीव निवास कहाया रे ।।२।।

माता पिता अरु सगे सम्बन्धी,
जान सभी पराया रे ।
इनके खातिर जीव कर्मों से
चौरासी भटकाया रे ।।३।।

आतम भाव में अब तुम रहना,
मान नहीं तू काया रे ।
कहे 'निरन्जन' गुरु कृपा से,
देह अभिमान मिटाया रे ।।४।।

आखिर नहीं कोई तेरा अपना
आखिर नहीं कोई तेरा रे ।

माता पिता सुत कुटुम्ब कामिनी,
मूर्ख कहे सब मेरा रे ।
भाई भतीजा बैन बेनाई,
सब स्वारथ के चेरारे ।। १ ।।

जन समूह सब जान बटोई,
कोउ नहीं किन केरा रे ।
एक दिन काल अचानक आई,
पकड़े सांझ सवेरा रे ।। २।।

जन धन योवन माल खजाने,
महल अटारी डेरा रे ।
देख तमाशा दिलमें फूले,
काल करत नहीं हेरा रे ।। ३ ।।

वेद शास्त्र अरु संत पुकारे,
तोउ सुनत नहीं बेरा रे ।
दास गरीब अजहुँ नहीं माने,
बहुत बेर हम टेरा रे ।। ४ ।।

मोह नींद से जागरे अबतो,
मोह नींद से जाग रे ।।0।।

मोह नींद में सब जग सोया,
जाग्रत आतम ज्ञानी रे ।
जग स्वप्न को सत्य समझकर,
सोच रहा अज्ञानी रे ।।१।।

ज्ञानी जग को दृश्य समझता,
द्रष्टा आपको जानी रे ।
हानि लाभ अरु शोक रोग में,
रोवत देह अभिमानी रे ।।२।।

स्वप्ने सम जाग्रत को देखो,
मानो वेद की वाणी रे ।
कहे निरन्जन' द्वन्द्व भाव में,
रहते सम विज्ञानी रे ।।३।।

मान सिखावन मेरी मनवा,
मान सिखावन मेरी रे ।।0।।

पल पल जात प्राण है प्यारे,
अब क्यु करत अबेरी रे ।
आत्म भजन करले मन मेरा,
त्याग चपलता तेरी रे ।।१।।

दुर्लभ दाव पड़ा अब तेरा,
क्या करना अब देरी रे ।
जो कुछ करना है सो करले,
फिर तो रात अन्धेरी रे ।।२।।

व्यर्थ उमरिया बीत जात है,
खबर नहीं पल केरी रे ।
क्या जाने कब काल ग्रसेगा,
एक दिन जंगल डेरी रे ।।३।।

वेद शास्त्र सब कहत पुकारी,
मै पुनः कहत हूँ टेरी रे ।
दास गरीब अब चेत बावरे,
सिर पर है यम बैरी रे ।।४।।

जात उमरिया बीती मनवा,
जात उमरिया बीती रे.... ।।0।।

बहुत गई अब अल्प रही है,
वह भी ज्याय व्यतीती रे ।
आत्म भजन कर मनुआ मेरा,
सब से होय अतीति रे ।।१।।

सेर लोट के कारण मनुवा,
अब क्यों करत अनीति रे ।
यह अवसर तो फेर न आवे,
होय अचानक इती रे ।।२।।

हरि भक्त से हिल मिल रहना,
सबसे करना प्रीति रे ।
सर्व भूत में समता रखना,
यही हरिजन की रीति रे ।।३।।

उठ खड़े हो क्या अलसावे,
आई मरण की भीती रे ।
दास गरीब हरि सुमिरन करले,
तो भागे भव भीती रे ।।४।।

आखिर तो है मरना मनवा,
आखिर तो है मरना रे.... ।।0।।

यदि किसी का भला न हो तो,
बुरा कभी नहीं करना रे ।
दया धरम को दिलमें रखकर,
हिंसा से तुम डरना रे ।।१।।

परमारथ के कारण प्राणी,
पाप कर्म मत करना रे ।
करमें दीपक लेकर मनुवा,
अंध कूप नहीं पड़नारे ।।२।।

छल कपट चतुराई करके,
पर धन को मत हरना रे ।
लक्ष चौरासी चक्कर मनवा,
अबतो तुम नहीं फंसना रे ।।३।।

इन्द्रियगण को संयम करके,
धीरज को तुम धरना रे ।
दास गरीब स्वनाम सुमिर के,
भव सागर से तरना रे ।। ।।४।।

निज रूप सुमिर सुखधाम,
जगत में जीवन दो दिन का ।।0।।

पाप कपट कर माया जोड़ी,
गर्व किया धनका ।
सभी छोड़कर चला मुसाफिर,
वास हुआ वन का ।।१।।

सुन्दर काया देख लुभाया,
लाड करे तन का ।
छूटी श्वाँस बिखर गई देही,
ज्यों माला मनका ।।२।।

योवन नारी लगे पियारी,
मोज करे मनका ।
काल बली का लगे तमाचा,
भूल जाय ठनना ।।३।।

यह संसार सपन की माया,
मेला पल छिन का ।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे,
अलख निरन्जन का ।।४।।

मैं तो रमता जोगी राम,
मेरा क्या दुनियाँ से काम ।।0।।

हाड मांस की बनी पुतलिया,
ऊपर जड़ा है चाम ।
देख देख सब लोग रिझावे,
मेरे भीतर राम ।।१।।

माल खजाने बाग बगीचे,
सुन्दर महल मुकाम,
एक पलक में सबहि झूठे,
संग चलेना दाम ।।२।।

माता-पिता अरु-बन्धु प्यारे,
भाई बहन सुत धाम ।
स्वारथ का सब खेल बना है,
नहीं इसमें आराम ।।३।।

दिन दिन पल पल छिन छिन काया,
घटत जात तमाम ।
'ब्रह्मानन्द' भजन कर सोऽहम्,
तो पावे विश्राम ।।४।।

निरगुण रंगी चादरिया रे,
कोई ओढ़े संत सुजान ।
कोई ओढ़े संत सुजान रे
कोई ओढ़े संत सुजान ।। 0 ।।

कोई कोई विरला जतन से पावे,
या चुनरी पिव के मन भावे ।
कितने ओढ़ भये वैरागी,
भये कई मस्तान ।।१ ।।

नाम के तार से बुनी चादरिया,
प्रेम भक्ति से रंगी चदरिया ।
सद्गुरु कृपा करे तो पावे,
यह अनमोलक दान ।।२ ।।

पोथि पढ़ि पढ़ि नयन गवांवे,
सद्गुरु नाथ शरण नहीं आवे ।
हरि नारायण निर्गुण सगुण,
सबही में पहचान ।।।।३ ।।

न मोक्षं भ्रमते तीर्थं, न मोक्षं भस्म लेपनम् ।
न मोक्षं ब्रहचर्यं हि, मोक्षं न इन्द्रिय निग्रहम् ।।

न मोक्षं कोटि यज्ञ च, न मोक्षं दान काञ्चनम् ।
न मोक्षं बनवासेन, न मोक्षं भोजनं बिना ।।

न मोक्षं मंद मोनेन, न मोक्षं देह ताड़नम् ।
न मोक्षं गायेत गीताम्, न मोक्षं शिश्न निग्रहम् ।।

न मोक्षं धर्मं कर्मेशु, न मोक्षं भूर्ति भावेन् ।
न मोक्षं सुजटा भारम्, न निर्जनं सेवनः स्तथा ।।

न मोक्षं धारणा ध्यानं, न मोक्षं वायु रोधनम् ।
न मोक्षं कन्द भक्षंण, न मोक्षं सर्व रोधनम् ।।

नाना शास्त्र पठेन लोकाः, नाना देवत पूजनम् ।
आत्म ज्ञानं बिना पार्थ, सर्व कर्म निरर्थकम् ।।

गर्भ गीता

मोक्ष ज्ञान से पावो रे साधो, मोक्ष ज्ञान से पाओ रे ।

तीर्थ भ्रमण से मिले नहीं वह, नहीं भस्मी लगाये रे ।
इन्द्रिय निग्रह से नहीं पावे, नहीं ब्रह्मचर्य धरायेरे ।।

चाहे कोटि यज्ञ कर देखो, स्वर्ण करो बहु दान रे ।
अन्न तजि उपवास करो अरु, पवन करो तुम पान रे ।।

मौन रहि सिद्धासन बैठो, देह का रहे न भान रे ।
शास्त्र पढ़ रट पंडित होकर, करो गीता का गान रे ।।

प्राणायाम अरु ध्यान धारण, चाहे देह करो कुर्बान रे ।
गायत्री का पाठ किये से, मिले न पद निर्वाण रे ।।

मन वाणी की गति नहीं जहँ, वेद न पावे पार रे ।
ज्ञान बिना नहीं पावे मुक्ति, पूजो देव अपार रे ।।

ज्ञानादेव तू कैवल्यम्, वेद करे बखान रे ।
कहे 'निरन्जन' यह रहस्यतू, गुरु शरण हो जान रे ।।

एजी गृहस्थी में ये मस्ती छाई कैसे,
आई कैसे कोई पूछे हमसे – २ बार

जाग्रत में अभिमान करे है धन दौलत और बलका,
स्वप्न में जाकर भिक्षुक होगया, भूलगया सब कलका ।
एजी सुषुप्ति में जड़ हो गया, भान रहा न तनका,
एजी तुरिया में हम साक्षी हुए कैसे,
हुए कैसे कोई पूछे हमसे ।।

....एजी

जरा बताओ कौन हो तुम, और क्या है नाम तुम्हारा
जिसको तूने मैं माना है यह माटी की काया ।
मैं तो इनसे न्यारा चेतन यह राज है पाया,
अब दुःखो में भी हंसना आया कैसे,
आया कैसे कोई पूछे हमसे ।।

....एजी

योगी खींचे योग में हमको, भोगी खींचे भोग में,
देखो ग्रन्थि पड़ी है कैसी, आन पड़े उलझन में ।
सतगुरु ने जब बोध कराया, निकल गये उलझन से,
अब भोगों में भी योगी हुए कैसे, हुए कैसे कोई पूछे हमसे

....एजी

ब्रह्मरूप जगत है सारा,
ब्रह्मरूप है सारा रे ।।0।।

बर्छी भाला कृपाण छूरी,
लोह रूप है न्यारा रे ।
घट मठ ईंट दीप सुराही,
मिट्टी का विस्तारा रे ।।१।।

कुर्सी, टेबल, पलंग, दरवाजा,
है तरूवर की माया रे ।
चेन चूड़ी अरु माला, कंगन
सबमें स्वर्ण समाया रे ।।२।।

सबहि मिठाई खांड की जानो,
खांड मिठाई माही रे ।
कहे 'निरन्जन' दृश्य चराचर,
ब्रह्म बिना कछु नाहीं रे ।।३।।

ब्रह्म चराचर वासी जानो,
ब्रह्म चराचर वासी रे ।।0।।

मोहन मिलने तुम नहीं जाना,
मथुरा गोकुल धामा रे ।
मन मन्दिर में सदा बिराजे,
साक्षी आतम श्यामा रे ।।१।।

राम मिलन को तुम ना जाना,
चलके अयोध्या धामा रे ।
हृदय अन्दर बसे निरन्तर,
साक्षी चेतन रामा रे ।।२।।

शंकर मिलने हेतु मत जाना,
काशी कैलाश धाम रे ।
देह देवालय माही बिराजे,
शंकर आतम नामा रे ।।३।।

आतम जान सफल कर जीवन,
छोड़ अहं यह चामा रे ।
कहे 'निरन्जन' ज्ञानी गुरु कर,
उतरो भव निष्कामा रे ।।४।।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी,
ईश्वर अंश जीव रे ।।0।।

अंशी अंश से होय न न्यारा,
जल हिम ले विचार रे ।
घट सुराही दीपक देवा,
मिट्टी एक निहार रे ।। १ ।।

माला चूड़ी कंगना मुंदरी,
एक स्वर्ण आधार रे ।
नभ में स्थित एक सूर्य के,
जल घट से विस्तार रे ।। २ ।।

पंच प्राण उप प्राण पवन के,
वायु से नहीं न्यारा रे ।
कहे 'निरन्जन' तिमि एक ब्रह्मही,
जीव जगत पसारा रे ।। ३ ।।

राम रूप पहिचानो साधो,
राम रूप पहिचानो रे ।।0।।

सब घट अन्दर खेल रहा जो,
रहता सबसे न्यारा रे ।
अस्ति भाति जो प्रिय स्वरूपा,
नाम रूप आधार रे ।।१।।

सत चित्त आनन्द अखण्ड अनादि,
अनुभव रूप अपारा रे ।
आना जाना जिसमें नाहीं,
जन्म न मरण विकार रे ।।२।।

असंग अलेपा रंग न रेखा,
ना को अंग अकारा रे ।
ब्रह्मा विष्णु आदिक देवा,
जाको करत जुहारा रे ।।३।।

जिसकी ज्योति निशदिन होती,
घट घट होत उजारा रे ।
कहे 'निरन्जन महिमा उसकी,
मनवाणी के पारा रे ।।४।।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
हरि व्यापक सर्वत्र रे ।।0।।

कारण कार्य उभय नहिं दोउ,
घट माटी हि जानो रे ।
हरि जगत अरू जगत हरि है,
वेद वचन यह मानो रे ।।१।।

ज्यों डाल पत्र शाखादि नाना,
वृक्ष एक कहाता रे ।
त्यों जगत जीव नानादिक को
एक ब्रह्म पहचानो रे ।।२।।

जिमि देह के किसी अंगको,
देह सेवाही मानो रे ।
तिमि एक जीव की सेवा,
'निरन्जन' सेवा जानो रे ।।३।।

ब्रह्म चराचर वासी साधो,
ब्रह्म चराचर वासी रे ।।0।।

सतगुरु अपनी किरपा करके,
कीना ब्रह्म दीदारा रे ।
ब्रह्म सिन्धु में नाम रूप मय,
उठे तरंग अपारा रे ।।१।।

सर्व जगत यह ब्रह्म रूप है,
नहीं कछु उससे न्यारा रे ।
कंचन भूषण कनक रूप है
बरतन मिट्टी अकारा रे ।।२।।

लोह रूप ही अस्त्र शस्त्र है,
सूत रूप पट सारा रे ।
कहे 'निरन्जन' गुरु लखाया,
पांचो भ्रान्ति बिसारा रे ।।३।।

ब्रह्म अगोचर व्यापक जानो,
ब्रह्म अगोचर व्यापक रे ।।0।।

दूध में घ्रत काष्ठ में अग्नि,
तिल में तेल समाया रे ।
घट मठ मन्दिर भेद उपाधिन,
एक आकाश छाया रे ।।१।।

बीज में वृक्ष फूल फलादि,
अव्यक्त रूप ठहराया रे ।
पंचभूत की इस काया में,
बसत ब्रह्म अकाया रे ।।२।।

माला में ज्यों पुष्प है नाना,
एक सूत्र धराया रे ।
त्यों सब घट में बसे 'निरन्जन',
वेदों में बतलाया रे ।।३।।

अखण्ड ब्रह्म को जान बावरे
अखण्ड ब्रह्म को जान रे ।।0 ।।

द्वैत भाव मृत्यु का दाता,
वेद करे बखान रे ।
जीव ईश में भेद न मानो,
घट मठ नभ समान रे ।।१ ।।

जो सब देश, काल, वस्तु हो रहता,
अखंड उसी को मान रे ।
माटी बरतन माटी जानो,
भूषण कनक समान रे ।।२ ।।

सीप माहिं ज्यों रूपा भासे,
रस्सी में सर्प दिखान रे ।
नींद में ज्यों स्वप्न संसारा,
त्यों ब्रह्म जगत लखान रे ।।३ ।।

कारण से कारज नहीं न्यारा,
जीव ब्रह्म नहीं आन रे ।
कहे 'निरन्जन' भेद लखेवह,
देव पशुवत जान रे ।।४ ।।

अहं ब्रह्म को रटना प्यारे,
अहं ब्रह्मको रटना रे ।।0।।

ज्ञान खड्ग को तेज करके,
कर्म पाश को कटना रे ।
अहं ब्रह्म अद्वैत बोध के,
निश्चय से नहीं नटनारा रे ।।१।।

नाम रूप यह दृश्य चराचर,
सब माया की घटना रे ।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म-रूपमें,
अभेद होकर डटना रे ।।२।।

ब्रह्म चिन्तन से भ्रष्ट होकर,
इधर उधर नहीं फँसना रे ।
दास गरीब कहे भेद वाद सुन,
अभेद से नहीं हटना रे ।।३।।

विश्व चराचर वासी आतम,
विश्व चराचर वासी रे ।
बिन जाने नर होत हेराने,
ज्युं मृग सूंघत घासी रे ।।

एक एवं अद्वैत अनामय,
आनन्द घन अविनाशी रे ।
जीव जगत जगदीश कल्पना,
नाम रूप सब फांसी रे ।।

ऊँच नीच में नहीं कम ज्यादा,
कहत वेदान्त विलासी रे ।
श्वान, शूकर, गौ ब्राह्मण अन्त्यज,
सब में सम सुख रासी रे ।।

सत्ता रूप सबन में वासी,
ढूंढत जई नर काशी रे ।
दास गरीब यह सबहि भ्रान्ति,
ज्ञानी के मन हाँसी रे ।।

मेरा सत् चित् आनन्द रूप, कोई कोई जाने रे ।

वेद मंत्र का मैं हूँ स्रष्टा, मन वाणी का मैं हूँ द्रष्टा ।
मैं हूँ साक्षी भूप कोई कोई जाने रे ।।... मेरा

पंच कोष से हूँ मैं न्यारा, तीन अवस्था से भी पारा ।
अनुभव सिद्ध स्वरूप, कोई कोई जाने रे ।। ... मेरा

जन्म मरण मेरा धर्म नहीं है, पाप पुण्य कछु कर्म नहीं है ।
अज निर्लेपी रूप कोई कोई जाने रे ।। ... मेरा

सूर्य चन्द्र में तेज मेरा है, अग्नि में भी ओज मेरा है ।
मैं हूँ स्वयं प्रकाश कोई कोई जाने रे ।।... मेरा

तीन लोक का मैं हूँ स्वामी, घट घट व्यापी अन्तरयामी ।
मैं हूँ सर्वाधार कोई कोई जाने रे ।।...मेरा

रामेश्वर निज रूप पहचानो, जीवब्रह्म में भेद न जानो ।
मैं हूँ आत्म स्वरूप कोई कोई जाने रे ।। ...मेरा

सच्चिदानन्द मैं नित्य निर्द्वन्द मैं ब्रह्म जाना,
अब रहा न कोई आना जाना ।।0।।

अस्ति भाति प्रिय जो अपारा, रूप स्वयं प्रकाश हमारा ।
मैं निराकार हूँ मैं ही साकार हूँ रूप माना,
मेरे संकल्प में जग समाना ।।१।।

मैं ही खेलता मैं ही खिलाता,
खेल रच रच के मैं ही मिटाता ।
संग ना लेश है, राग ना द्वेष है, नित्य ज्ञाना,
होके द्रष्टा दृश्य दरसाना ।।२।।

न मैं मन बुद्धि चित्त हंकारा,
तीन गुण पांच कोषों से न्यारा ।
संग न दोष है वृत्ति सन्तोष है नित अघाना,
अपने आनन्द में जग समाना ।।३।।

ब्रह्म रूप में सब कुछ आपे,
ना और दूसरा कोई भासे ।
किसकी पूजा करूँ ? किसका ध्यान धरूँ ? नहि आना,
मेरा सोऽहम् रूप है पुराना ।।४।।

यह जग मेरे ही करके तो भान है ।।0 ।।

नाम रूप गर मैं न होता,
तो यह होता कैसे भान ।
ये सुन्दर प्रत्यक्ष अनुभव प्रमाण है ।।१ ।।

घट पट से मृत तन्तु निकाले,
फिर क्या नाम रूपको पावे ।
ऐसे मुझसे भिन्न न कोई जहान है ।। २ ।।

ईश्वर जीव अविद्या माया,
कल्पित मुझमें खेल दिखाया ।
मेरी तो अस्ति भाति प्रिय शान है ।। ३ ।।

वृत्ति तज कर निजमें आओ,
शेष आपने आप समाओ ।
जहाँ हम तुम कोई नहीं विज्ञान है ।। ४ ।।

सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द तू जीव माना,
बन गया देह में ही दिवाना ।।0।।

अपने अज्ञान से तू भ्रमाया,
शेर होके म्याउ म्याउ मचाया ।
मेरा परिवार है, मेरा सम्मान है, और खजाना,
सीपकी चाँदीवत इनमें भुलाना ।।१।।

तेरी माया ही तुझको रूलाती,
खेल रच रच के तुझको रिझाती ।
खेल तू खेलता, नित्य दुःख झेलता फिरभी ना थकाना,
चाहे तू मरूस्थल के जलमें नहाना ।।२।।

होके अविनाशी जन्मा मरा है,
तूने व्यापक को सीमित माना है ।
येही भ्रम भूल है, तुझको ही शूल है, जो भूलाना,
झूठे जग को तूने सत्य माना ।।३।।

होके ब्रह्म तू जीव बन खड़ा है,
मुक्त होके बन्धन में पड़ा है ।
भेद भक्ति को तज, कर्ता बनके न कर, साक्षी जाना,
चाहे तू जो मुक्ति को पाना ।।४।।

साक्षातकार का मर्म सुनो मन,
साक्षात्कार का मर्म रे ।।0।।

आतम भिन्न अनातम जानो,
द्रष्टा आतम मान रे ।
द्रष्टा कबहूँ दृश्य न होवे,
दृश्य अनातम जान रे ।।१।।

प्रमाता प्रमाण प्रमेय जगत है,
पर प्रकाश्य कहावे रे ।
स्वयंसिद्ध आतम तू है,
व्यर्थहिं क्यों भरमावे रे ।।२।।

साक्षात्कार की क्यों करो चाहना,
'कार' की नहीं दरकार रे ।
'निरन्जन' सद्गुरु शरणागत हो,
अहमात्मा उर धार रे ।।३।।

भेद भाव भटकावे भव में,
भेद भाव भटकावे रे ।।टेर।।

तत्त्वमसि का शोधन करके,
सोऽहम् भाव में रहना रे ।
अभेद का अनुभव कर तू,
जीवन्मुक्त हो रहना रे ।।१।।

जीवभाव को जड़ से जलाकर,
ब्रह्मभाव में रहना रे ।
मानव जीवन मुक्ति द्वार पर,
आकर तू न भटकना रे ।।२।।

भेदवादी का वचन सुनकर,
सत्य बोध नहीं तजना रे ।
जीव–शिव यह एक रूप है,
ऐसे वेद बताना रे ।।३।।

दास भाव मन में रखकर,
जन्म मरण नहीं फंसना रे ।
आत्म 'निरन्जन' ब्रह्म रूप है,
यह निश्चय उर धरना रे ।।४।।

सोऽहम् सोऽहम् जापकरो,
सद्गुरु देवका ध्यान करो ।
सोऽहम् ब्रह्मा, सोऽहम् विष्णु,
सोऽहम् शंकर मान करो ।।१।।

सद्गुरु देव का ध्यान करो,
निज स्वरूप का ज्ञान करो ।
सो परमात्मा हम हैं आत्मा,
सोऽहम् सोऽहम् गान करो ।।२।।

सद्गुरु की तुम शरण ग्रहो,
मन वच कर्म से सेवा करो ।
तन मन धन कुर्बान करो,
मानव जीवन सफल करो ।।३।।

विवेक वैराग्य श्रद्धादि से,
श्रवण मनन अरु ध्यान करो ।
वचनामृत नित पान करो,
'निरन्जन' आत्म उद्धार करो ।।४।।

सोऽहम् सोऽहम् ध्यान करो,
सोऽहम् भज त्रिताप हरो ।
श्वाँसमें 'सो' प्रश्वास में 'हम्',
सोऽहम् हंसा सुमिरा करो ।।१ ।।

सतगुरु देव की शरण पड़ो,
अद्वैत भाव में नित्य चरो ।
देहभाव न मन करो,
सोऽहम् भाव से भव तरो ।।२ ।।

वह परमात्मा मैं जीवात्मा,
यह द्वैत भाव कर क्यों मरो ।
सोऽहम् द्रष्टा सोऽहम् साक्षी,
सोऽहम् ब्रह्म यह दृढ़ करो ।।३ ।।

सोऽहम् सत्यम् सोऽहम् ज्ञानम्,
सोऽहम् अनन्तम् ध्यान करो ।
सोऽहम् नित्यम्, सोऽहम् शुद्धम्
सोऽहम् 'निरन्जन' ध्यान करो ।।४ ।।

सोऽहम् भाव में रहना अबतो,
सोऽहम् भाव में रहना रे ।।0 ।।

आत्म भाव से ब्रह्म को पाकर,
फेर गर्भ नहीं पड़ना रे ।
भजन नाम है चित्त का चिन्तन,
भजन धर्म है मनका रे ।।१ ।।

श्वाँसो से कर सोऽहम् चिन्तन,
छोड़ माला के मणका रे ।
एक पलक मन ठहर सकेना,
हरदम रहता ठनका रे ।।२ ।।

जड़ वस्तु का चिन्तन करके,
निशदिन रहता मातम रे ।
जड़ चिंतन से जड़ही बनता,
चिंतन चेतन आतम रे ।।३ ।।

दास भाव से मुक्ति न पावे,
गावे वेद महातम रे ।
कहे 'निरन्जन' सोऽहम् भाव से,
कर दीदार परमातम रे ।।४ ।।

सोऽहम् रूप पहचानो साधो,
सोऽहम् रूप पहचानो रे ।।0।।

'सो' वाचक है परम ब्रह्म का,
'अहं' जीव को जान रे ।
जीव ब्रह्म है एक स्वरूपा,
भेद तनिक नहीं मान रे ।।१।।

भाग त्याग से लक्ष को लेकर,
अहं ब्रह्म ले जान रे ।
सत चित आनन्द रूप अनादि,
अजर अमर सुख खान रे ।।२।।

जीव ईश उपाधि त्यागो,
तू दोऊन अधिष्ठान रे ।
ब्रह्म 'निरन्जन' निजको जानो,
तजो देह अभिमान रे ।।३।।

शिवोऽहम्

शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम्
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ,
अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
अखिल विश्व का जो परम आत्मा है,
सभी प्राणियों का वही आत्मा है,
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
अमर आत्मा है, मरणशील काया,
सभी प्राणियों के जो भीतर समाया,
वही आत्मा सच्चीदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
जिसे न शस्त्र काटे न अग्नि जलावे,
बुझावे न पानी न मृत्यु मिटावे,
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
है तारों–सितारों में आलोक जिसका,
है चन्दा व सूरज में आभास जिसका,
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
जो व्यापक है कण कण में है वास जिसका,
नहीं तीनों कालों में हो नाश जिसका,
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।
अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया,
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया,
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।। शिवोऽहम् ।।

आत्मानुभूति

मनोबुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहं,
न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे ।
न च व्योम भूमि न तेजो न वायुः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायूः
न वा सप्तधातु र्न वा पंचकोषः ।
न वाक् पाणि पादं न चोपस्थ पायूः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः ॥
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मन्त्रो न तीर्था न वेदा न यज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहं ॥

न मे मृत्यु शंका न मे जाति भेदः,
पिता नैव मे नैव माता च जन्म ।
न बन्धु र्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो,
विभु व्याप्त सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
सदा मे समत्वं न बन्ध न मुक्तिः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

नाहं मनुष्यो न च देव यक्षो,
न ब्राह्मण्य न क्षत्रीय न वैश्य शुद्रः ।
नाहं ब्रह्मचारी न गृही न वनस्थो
भिक्षुर्न चाहं शिवोऽहं – शिवोऽहम् ॥

स्वरूप साक्षात्कार

जो सुख नित्य प्रकाश विभु, नाम रूप आधार ।
मति न लखै जिहि मति लखै, सो मैं शुद्ध अपार ।।१।।

अब्धि अपार स्वरूप मम, लहरी विष्णु महेश ।
विधि रवि चन्दा वरूण यम, शक्ति धनेश गणेश ।।२।।

जा कृपालु सर्वज्ञ को, हिय धारत मुनि ध्यान ।
ताको होत उपाधि तै, मोमें मिथ्या भान ।।३।।

ह्वै जिहि जानै बिनु जगत, मनहु जेवरी साँव ।
नशै भुजंग जग जिहिं लहैं, सोऽहं आपे आप ।।४।।

बोध चाहिं जाको सुकृति, भजन राम निषकाम ।
सो मेरा है आतमा, काकू करूं प्रणाम ।।५।।

मुझे मेरी मस्ती, कहाँ लेके आई
जहाँ मेरे अपने, सिवा कुछ नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।0 ।।

लगा अब पता मुझको, हस्ती का मेरी,
बिना मेरे अपने, कहीं कुछ भी नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।१ ।।

न दुःख है न सुख है, नहीं शोक गम भी,
अजब है यह मस्ती, पिया कुछ भी नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।२ ।।

सभीमें सभीसे, परे मैं ही मैं हूँ,
बिना मेरे अपने यहाँ कुछ नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।३ ।।

अरे मैं हूँ आनन्द, आनन्द है मेरा,
यह मस्ती ही मस्ती है, बना कुछ भी नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।४ ।।

यह सागर यह लहरें, यह झाग और बुदबुदे,
कल्पित हैं जल में, और कुछ नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।५ ।।

पर्दा यह दुई का, हटाके जो देखा,
सभी एक मैं हूँ, जुदा कुछ नहीं है ।।
मुझे मेरी मस्ती ।।६ ।।

शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् बोलो,
निरन्जन के प्यारो शिवोऽहम् बोलो ।।0।।

विश्व में व्यापक आत्मरूप तुम हो,
इन्द्रियों से अगोचर अगम रूप तुमहो ।
एकरस चिदानन्द रूप तुम हो,
भूल से भी तुम जीवोऽहम् न बोलो ।।१।।

अग्नि न जलावे अदाह्य रूप तुम हो,
पवन न उड़ावे अचल रूप तुम हो ।
मृत्यु न मिटावे अमर रूप तुमहो,
देह से मिलकर देहोऽहम् न बोलो ।।२।।

सर्व से परे सर्वाधार तुम हो,
सर्व रूप निर्गुण निराकार तुम हो ।
अकर्ता अभोक्ता साक्षी रूप तुम हो,
मनसे मिल कर्ताऽहम् न बोलो ।।३।।

जगत दृश्य के द्रष्टा चेतन रूप तुम हो,
भूख प्यास से न्यारे पूर्ण काम तुम हो ।
सुख दुःख से परे सदानन्द तुम हो,
कहे 'निरन्जन' कभी तुम दासोऽहम् न बोले ।।४।।

तुम हो साक्षी आतम मन के,
तुम हो साक्षी आतम रे ।।0 ।।

तीन गुणों से आप अतीता,
नहीं बैरी अरू मीता रे ।
जाति वर्ण कुल एकहुँ नाहीं,
माता नहीं की पिता रे ।।१ ।।

तुममें ना कोउ अंग आकारा,
राम नहि की सीता रे ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति नाहीं,
तुम साक्षी तुरीयातीता रे ।।२ ।।

भूख प्यास अरु जन्म मरण का,
जीव सदा दुःख पाता रे ।
कहे 'निरन्जन' तुम सबसे न्यारे,
ब्रह्म रूप हो भ्राता रे ।।३ ।।

साक्षी को निज रूप पहचानो,
साक्षी को निज रूप रे ।।0 ।।

साक्षी का है सब घट वासा,
सब में रहता छुपके रे ।
सोऽहम् रूप से ध्यान को करना,
देह से भिन्न अरूपा रे ।।१ ।।

शुभाशुभ सब कर्मों को,
देखत रहत वह चूपके रे ।
साक्षी चेतन ब्रह्म स्वरूपा,
सोई तेरा स्वरूप रे ।।२ ।।

गुरु शास्त्र में श्रद्धा करके,
जानो रूप अनूपा रे ।
सब देवों का देव 'निरन्जन',
है आतम स्वरूपा रे ।।३ ।।

साक्षीका तुम निश्चय करना,
साक्षीका तुम निश्चय रे ।।0।।

अभय पक्ष रहत उदासी,
समीपवर्ती जोई रे ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति माही,
पुष्य सूत्र जो पोई रे ।।१।।

साक्षी सदा अकर्ता जानो,
बांध सके ना कोई रे ।
करता भाव से कर्म करे जो,
जन्म मरण में रोई रे ।।२।।

कर्त्ता भाव का त्याग करे जो,
जन्म मरण मिट जाई रे ।
कहे 'निरन्जन' साक्षी रहकर,
यम के फन्द छुड़ाई रे ।।३।।

साक्षी भाव अपनाओ भैया,
साक्षी भाव अपनाओ रे ।।0।।

साक्षी भाव को जिसने साधा,
सदा समाधि उसको रे ।
साक्षी भाव है जिसके मन में,
ग्रहण त्याग नहीं उसको रे ।।१।।

पुण्य पाप उसको नहीं लागे,
ब्रह्म भाव है जिसको रे ।
मित्र शत्रु जिसे भासत नाहीं,
भेद भाव जिन खिसको रे ।।२।।

कर्ता भाव तो बन्ध करावे,
साक्षी बन्ध न खटको रे ।
सर्व कर्म का त्याग हि करके,
साक्षी में मन लटको रे ।।३।।
सर्व धर्म का अहंकार कर,
क्यों भव बन्धन भटको रे ।
कहे 'निरन्जन' मुक्त हुआ वह,
देह भाव जिन झटको रे ।।४।।

ब्रह्म जिज्ञासा के कारण तुम,
आत्मा का अभ्यास करो ।।0 ।।

जो जन प्रेम लगाकर जिसका,
निशदिन रमण करता है ।
वह उसको अवश्य ही मिलता,
ये मन में विश्वास करो ।।१ ।।

गंगा नदी धारा ज्यों श्वांसो का,
चलत अखंड प्रवाह सदा ।
आत्मा का त्यों स्मरण करके,
संशय सबहि नाश करो ।।२ ।।

श्रवण मनन निदिध्यासन करके,
देहाध्यास का नाश करो ।
कहे 'निरन्जन' गुरु ज्ञान से,
साक्षी भाव में रमण करो ।।३ ।।

साक्षी भाव के साक्षी तुमहो,
साक्षी भावके साक्षी रे ।।0 ।।

जाग्रत स्वप्न अवस्था में ही,
चेतन साक्षी कहाया रे ।
सुषुप्ति में तो रहे नित आतम,
साक्षी नहीं लखाया रे ।।१ ।।

ब्रह्म सत्य जगत है मिथ्या,
ऐसा वेद बतावे रे ।
तब मिथ्या दृश्य जगत का कैसे,
आतम साक्षी कहावे रे ।।२ ।।

द्रष्टा साक्षी वृत्ति है मिथ्या,
चिदाभास उपाधि रे ।
साक्षी भाव के तुम हो साक्षी,
निरूपाधि निरन्जन रे ।।३ ।।

मानुष तन का लक्ष्य यही है, जाने अपना आप सदा
भेद भ्रम सब संशय मेटे, करे गुरु मंत्र का जाप सदा ।।
ब्रह्म रूप नित आतम को लख, हरले तीनों ताप सदा ।
ब्रह्मानन्द में लीन करे मन, झूठा तज अहंकार सदा ।।१ ।।

मानुष का यह मनुषपना है, करले पर उपकार सदा ।
भूखे को अन्न भोजन देना, प्यासे को जल पान सदा ।।
रोगी को कछु औषध देना, अतिथि संत सत्कार सदा ।
सब जीवों की सेव करे नित, हरिमय लख संसार सदा ।।२ ।।

जन्म पाय निज आतम का, जिसने ना प्रत्यक्ष दीदार किया ।
दयावान हो जीव किसीका, कबहुँ ना उपकार किया ।।
धिक धिक ऐसे जीवन को है, मानुष तन बेकार किया ।
खाना पीना वृथा तिनका, भूमिपर वे भार किया ।।३ ।।

कहे 'निरन्जन' अब भी अवसर, संत शरण में वास करो ।
ब्रह्मज्ञान ले गुरु पूरे से, अविद्या सकल विनाश करो ।।
देवी गुणों का हृदय अन्दर, पूर्ण तुम प्रकाश करो ।
निष्कामी निर्मानी होकर, मल विक्षेप को दूर करो ।।४ ।।

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु शरण में, साधन चतुष्टय हो जावेगा ।
भली प्रकार दंडवत करके, दीन भाव दरशावेगा ।।
जिज्ञासु की करके परीक्षा, गुरु महावाक्य सुनावेगा ।
वही बड़भागी इस जीवन में, जो परमानन्द को पावेगा ।।१।।

तत्त्वम् पदमें माया–अविद्या, भाग त्याग से काटेगा ।
जीव ईश के चिदाभासका, भेद सभी मिट जावेगा ।।
फिर अधिष्ठान साक्षी ब्रह्मको, तत्त्वमसि रूप जनावेगा ।
वही बड़भागी इस जीवन में, जो परमानन्द को पावेगा ।।२।।

भेद की बाधक अभेद की साधक युक्ति से मनन करावेगा ।
मनन ध्यान की दृढ़ता से ही, सोऽहम् निश्चय धारेगा ।।
साक्षी शिवोऽहम् सिंह नाद से, भेद भ्रम भाग जावेगा ।
वही बड़भागी इस जीवन में, जो परमानन्दको पावेगा ।।३।।

सच्चिदानन्द तू असंग ब्रह्म है, ऐसी अखण्डता लावेगा ।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म संसारा, नाम रूप मन त्यागेगा ।।
अध्यस्त नाम रूप जग सारा, अधिष्ठान ब्रह्म जानेगा ।
वही बड़भागी इस जीवन में, जो परमानन्द को पावेगा ।।४।।

अग्नि उष्णता कभी न छोड़े, बरफ न उष्णता धारेगा ।
नीम कभी नहीं मीठा होवत, वस्तु स्वभाव नहीं जावेगा ।
त्युं मैं आत्मा मुक्त स्वभावी, बन्ध कभी नहीं आवेगा ।
कहे 'निरन्जन' सत्गुरु स्वामी, वह जीवन्मुक्ति पावेगा ।।५।।

यदि मोक्षकी है चाहना, तो जा गुरु की शरण में,
कुर्बान करके सब कानना, निष्काम हो पड़ चरणमें ।
ब्रह्मरूप है गुरुदेव ऐसा, भाव ही हृदय आगया,
अद्वैत आतम ज्ञान का अधिकार ही तब पायगा ।।१ ।।

स्वर्ण को सुनार ज्यों करके कसोटी जोय है,
फिर दहन छेदन भी करे तबही परीक्षा होय है ।
त्यु शिष्य को सद्गुरु कसे, विक्षेप मल जल जायगा,
अद्वैत आतम ज्ञान का अधिकार ही तब पायगा ।।२ ।।

अभिमान जाति वर्णका, मन वचन से तु छोड़के,
जाना तू गुरु की शरण में, नाता जगत का तोड़के ।
फिर मोह ममता जालमें, कबहुँ नहीं उरझायगा,
अद्वैत आतम ज्ञान का अधिकार ही तब पायगा ।।३ ।।

सब लोक लज्जा छोड़ के, अपमान को सहना नहीं,
निर्मान हो गुरुदेव की, सेवा करो शरणे रही ।
युं गरीब छोड़ी गर्व को, निर्मान जब हो जायगा,
अद्वैत आतम ज्ञान का, अधिकार तबही तब पायगा ।।४ ।।

जिसको नहीं कुछ कामना, वो काहे कर्मे को करे ।
बनके गधा फिर और का, बोझ उठाके क्यों फिरे ।।

अपने ही आग लगाई के, जलवा दिये घरबार है ।
ऐसे फकीरों के लिये फिर, और क्या दरकार है ।।१।।

जिसको है लिप्सा लोक की, उसको ये सब कर्तव्य है ।
लिप्सा गई जब लोक की, तबही गये उन कर्तव्य है ।।
किस से नहीं कछु वैर है, अरु नहीं किसीसे प्यार है ।
ऐसे फकीरों के लिये फिर, और क्या दरकार है ।।२।।

निन्दा अरु स्तुति सुने, जाने सबै बकवाद है ।
बुरा भला किसको कहे, सब ईश की औलाद है ।।
निर्वाह में जैसा मिले, करते नहीं इन्कार है ।
ऐसे फकीरों के लिये फिर, और क्या दरकार है ।।३।।

अलमस्त अपने में रहे, नहीं और से कुछ काम है ।
लेना नहीं देना नहीं, रखते नहीं कुछ दाम है ।।
फिर गरीब आठोंयाम, सोऽहम् लगा दिलमें तार है ।
ऐसे फकीरों के लिये फिर, और क्या दरकार है ।।४।।

जाना जिन निज रूपको, फिर काहे कर्मों को करे ।
वो एक अद्वय रूप है, कबहुँ नहीं जन्मे मरे ।।

संसार भ्रान्ति भीत को, जिसने दिया सबको ढहा ।
ऐसे विवेकी के लिये, फिर और क्या करना रहा ।।१ ।।

अज्ञान से जो कल्पित है, वो कर्म से कटता नहीं ।
जैसे अंधेरा रातका, हथियार से हटता नहीं ।।
वो जानते मृगवारी में, संसार सब जाता बहा ।
ऐसे विवेकी के लिये फिर और क्या करना रहा ।।२।।

वो विश्व के व्यवहार में, सब से रहे निर्लेप है ।
यह जगत भावा भाव में, उनको नहीं विक्षेप है ।।
कर्ता नहीं कर्मी नहीं, फिर कारण भी कैसे कहा ।
ऐसे विवेकी के लिये, फिर और क्या करना रहा ।।३ ।।

कारण अविद्या नींद में, यह लखा शोर बकोर है ।
जब ज्ञान जाग्रती भई, सत्ता नहीं कछु और है ।।
यों गरीब आतम रूप है, कल्पित का कारण महा ।
ऐसे विवेकी के लिये, फिर और क्या करना रहा ।।४ ।।

अधिष्ठान अरू अध्यस्तकी, सत्तानहीं कहुँ भिन्न है ।
कल्पित कारण कार्य में, वास्तविक वस्तु अभिन्न है ।।
मिसरी ज्यों वस्तु एक है, कल्पित कार्य अनेक है ।
अद्वैत ब्रह्म अरु जगत की, सत्ता सर्वदा एक है ।।१।।

यह जीव ब्रह्म स्वरूप है, यामें नहीं कोउ शंक है ।
आवागमन है लिंग में, चैतन्य में न कलंक है ।।
लक्षणा से लेके लक्ष को, वे करत संत विवेक है ।
अद्वैत ब्रह्म अरु जगत की, सत्ता सर्वदा एक है ।।२।।

अपने ही ज्ञान स्वरूप में, ज्ञानी सदा अलमस्त है ।
प्रातः नहीं संन्ध्या नहीं, उदय नहीं नहीं अस्त है ।।
ज्यों का ही त्यों उद्योत है, यह वेद में उल्लेख है ।
अद्वैत ब्रह्म अरू जगतकी, सत्ता सर्वदा एक है ।।३।।

है ज्ञान सम कालिन मुक्ति, कहत युं वेदान्त है ।
अद्वैत वादी संतका भी, अटल यही सिद्धान्त है ।।
युं गरीब अद्वैत वाद में, यह वेद भारी मेख है ।
अद्वैत ब्रह्म अरू जगत की, सत्ता सर्वदा एक है ।।४।।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
कर्म प्रधान रचि राखा रे ।। ० ।।

कर्म सिवा नहीं कोउ जगमें,
शत्रु मित्र दिखाता रे ।
जो कछु कर्म जब तुम करते,
राम झरोखे लखता रे ।।१ ।।

कोउ न काहू सुख दुःखकर दाता,
किये कर्म भुगाता रे ।
जीव दया अरू हत्या करके,
जीव वही फल पाता रे ।।२ ।।

किये कर्म का हरि फल दाता,
पक्षपात नहीं करता रे ।
कहे 'निरन्जन' प्रभुजी मेरे,
पुण्य पाप नहीं लेता रे ।।३ ।।

मन तुम नाहक द्वन्द मचाये ।
करि स्नान छुवो नहीं काहू, पाती फूल चढ़ाये ।
मूरति से दुनियाँ फल मांगे, अपने हाथ बनाये ।।

यह जग पूजै देव देवरा, तीरथ बरत कराये ।
चलत फिरत से पांव थकत है, यह दुःख कहाँ समाये ।।

झूठी काया झूठी माया, झूठे जूठ लखाये ।
बांझिन गाय दुध नहीं देवे, माखन कहाँ से पाये ।।

सांचे के संग साँच बसत है, झूठे मारि भगाये ।
कहे 'कबीर' जहां सांच वस्तु है, सहजै दरसन पाये ।।

चदरिया झीनी रे झीनी । ये राम नाम रस भीनी,
चदरिया झीनी रे झीनी ।।0।।

अष्ट प्रहर का चरखा चाले,
पंच तत्त्व की पुनी ।
नौ दस मास बुनन को लागे,
मूरख वृथा कीन्ही ।। १ ।।

जब यह चादर बन घर आयी,
रंग रेज को दीन्ही ।
प्रेम भक्ति को रंग चढ़ाकर,
सतगुरु ने रंग दीन्ही ।।२।।

चादर औढ़ शंका मत करियो,
संतन तुमको दीन्ही ।
मूरख लोग जतन नहीं कीन्हीं,
निशदिन मैली कीन्हीं ।।३।।

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी,
शुकदेव ने निर्मल कीन्हीं ।
दास 'कबीर' ने ऐसी ओढ़ी,
ज्यों की त्यों धर दीन्ही ।।४।।

मान मेरा कहना नहीं तो पछतायेगा,
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा ।।0 ।।

सून्दर रूप देखकर भूला,
धन जवानी के मद में फूला ।
एक दिन हंसा अकेला उड़ जायेगा,
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा ।। १ ।।

पत्नी पति पिता अरू माता,
सखा सुमित्र सहोदर भ्राता ।
क्षण भर में नाता सभी से छुट जायेगा,
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा ।। २ ।।

हीरा जवाहर की माला तुम्हारी,
मखमल के गद्दे और रेशम की साढ़ी ।
हैट सूट बूट सब यहीं रह जायेगा,
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा ।। ३ ।।

हीरा सा जनम गवाँय दिया रोय-रोय,
फिर पछताते हो दिवाने मन रोय-रोय ।
'ब्रह्मानन्द' ऐसा जनम नहीं पायेगा,
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा ।। ४ ।।

गुरुदेव तुम्हारे कई उपासक,
कई ढंग से आते हैं ।
तन मन धन समर्पण करके,
श्रद्धा सुमन चढाते हैं ।।0।।

मैं अनाथ हूँ अति निष्किंचन,
कुछ भी भेंट नहीं लाई ।
फिर भी साहस करके प्रभुजी,
मैं दर्शन को चली आई ।।१।।

पूजा और पूजावा प्रभुजी,
इसी पुजारिन को समझो ।
दान दक्षिणा और निछावर,
इसी भिखारिन को समझो ।।२।।

चरणों में अर्पित है तन मन,
चाहो तो स्वीकार करो ।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो या प्यार करो ।।३।।

ऊधो मोहे संत सदा अति प्यारे,
जाकी महिमा वेद उचारे ।।0 ।।

मेरे कारण छोड़ जगत के,
भोग पदारथ सारे ।
निस दिन ध्यान धरे हृदय में,
सब घर के काज बिसारे ।।१ ।।

मैं संतन के पीछे जाऊँ,
जहाँ जहाँ संत सिधारे ।
चरणन रज निज अंग लगाऊँ,
होवे शुद्ध गात हमारे ।।२ ।।

संत मिले तब मैं मिल जाऊँ,
संत न मुझसे न्यारे ।
संतन बिन मोहे पावे नाहीं,
कोटी जतन कर हारे ।।३ ।।

जो संतन के सेवक जगमें,
सो सेवक मोरे भारे ।
ब्रह्मानन्द संतजन पल में,
भवबन्धन काट डारे ।।४ ।।

बना दे मोक्ष का मारग,
गुरु मैं शरण हूँ तेरी ।।0।।

जगत के बीच में नाना,
किसन के पंथ हैं भारे ।
सुनाते हैं कथा अपनी,
भटकते हो गई देरी ।।१।।

कोई मूरत के पूजन को,
बताते होम करने को ।
कोई तीरथ के दर्शनको,
फिराते हैं सदा फेरी ।।२।।

किताबें धर्म चर्चा की,
हजारों बाँच कर देखी ।
मिटा संशय नहीं मन का,
अकल जंजाल में घेरी ।।३।।

सकल दुनियाँ में है पूरण,
सुना मैं रूप आतम का ।
वो ब्रह्मानन्द बिन गुरु के,
मिटे नहीं भरमना मेरी ।।४।।

दिखादे रूप आतम का,
मुझे गुरुदेव करूणा कर ।।0।।

कोई वैकुण्ठ के ऊपर,
कोई कैलाश पर्वत में ।
कोई सागर के अन्दर में,
बतावे शेष शय्या पर ।।१।।

कोई दुर्गा गजानन को,
कहे जगदीश सूरज को ।
कोई सब सृष्टि का करता,
चतुर्मुख देव परमेश्वर ।।२।।

धरे नित ध्यान योगी जन,
कोई निर्गुण निरन्जन का ।
कोई मूरत पुजारी है,
कोई अग्नि का है चाकर ।।३।।

सफल संसार में पूरण,
कहें वेदान्त के वादी ।
वो 'ब्रह्मानन्द' संशय को,
मिटाकर तारें भवसागर ।।४।।

मन मस्त भया फिर क्यों डोले ।।0।।

हलकी थी तब चढ़ी तराजू,
पूरी भई फिर क्यों तोले ।।१।।

सूरत कलाली भई मतवाली,
मदवा पी गई बिन तोले ।।२।।

हंसा पाया मान सरोवर,
ताल तलैया क्यों डोले ।। ३ ।।

हीरा पाया गाँठ लगाया,
बार-बार वाको क्यों खोले ।।४।।

अपनो साहिब है घट भीतर,
बाहर नैंना क्यों खोले ।। ५ ।।

कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो,
साहब मिल गया तिल ओले ।। ६ ।।

ओ चेतन जीव बिचार जरा,
तू पूर्ण ब्रह्म सनातन है ।
सत-चित-आनन्द स्वरूप तेरा,
कालों का काल विनासन है ।।0।।
स्थूल वा सूक्ष्म शरीर नहीं,
नहीं कारण देह अविद्या तू ।
इन सबका जाननहार सदा,
शिव साक्षी इक आनन्दघन है ।।१।।
जाग्रत वा स्वप्न सुषुप्ति में,
ना देश न काल परिच्छेद तेरा ।
ना भेद सजाति विजाती है,
तू तुर्यातीत महाधन है ।।२।।
मन बुद्धि चित अहंकार नहीं,
पंच कोषों का तू द्रष्टा है ।
कर्त्ता भोक्ता नहीं धर्म तेरा,
तू अन्तःकरण विशेषण है ।।३।।
अजर अमर शुद्ध स्वरूप तेरा,
कूटस्थ ब्रह्म निर्विकारी तू ।
शिव ब्रह्मादिक सब रूप तेरे,
विभू व्यापक एकरस आत्मन है ।।४।।
श्री सतगुरु की अनुकम्पा से,
जिसने देहाभिमान को गला लिया ।
जीते जी ही वह मुक्त हुआ,
सर्वत्र उसे ब्रह्मदर्शन है ।।५।।

भीत भरम की तोड़े, ऐसे तोड़े,
ऐसे तो साधू थोड़े ।। ० ।।

आप समान सब जग को बनावे,
भेद भाव को दूर हटावे ।
मन समता में जोड़े,
ऐसे तो साधू थोड़े ।।१ ।।

आप जगे और जगत जगावे,
दीनों के प्रति प्रेम बढ़ावे ।।
फोड़े कुप्रथाओं के फोड़े,
ऐसे तो साधू थोड़े ।। २ ।।

भूले हुओं को मारगलावें,
कर्म योग का ज्ञान बतावें ।
मार शब्द के कोड़े,
ऐसे तो साधू थोड़े ।। ३ ।।

'निरन्जन' ऐसे संत जो होई,
निस्वार्थ नित ज्ञान देवे सोई ।
वे हैं वेदान्त केशरी बेजोड़े,
ऐसे तो साधू थोड़े ।। ४ ।।

स्वामी निरंजन ग्रंथावली

१. शान्तिपुष्प
२. भूली बिसरी स्मृति
३. सरल वेदान्त प्रश्नोत्तरी-१
४. सरल वेदान्त प्रश्नोत्तरी-२
५. सरल वेदान्त प्रश्नोत्तरी-३
६. सरल वेदान्त प्रश्नोत्तरी-४
७. मैं अमृत का सागर
८. मैं ब्रह्म हूँ
९. प्राणायाम,मुद्रा, ध्यान एवं वेदान्त पारिभाषिक शब्दकोश
१०. सीता गीता
११. राम गीता
१२. गुरु गीता
१३. पंचदशी प्रश्नोत्तर दीपिका
१४. भागवत रहस्य
१५. आत्म साक्षात्कार
१६. मन की जाने राम
१७. योग वशिष्ठ सार
१८. निरंजन भजनामृत सरिता
१९. स्वरूप चिन्तन
२०. कर्म से मोक्ष नहीं
२१. श्रद्धा की प्रतिमा सद्‌गुरू
२२. अमृत बिन्दु
२३. उपनिषद् सिद्धान्त एवं वेदान्त रत्नावली
२४. सहज समाधि
२५. ज्ञान ज्योति
२६. कबीर साखी संकलन
२७. सहज ध्यान
२८. हे राम ! उठो जागो
२९. सद्‌गुरू कौन ?
३०. श्रीराम चिन्तन
३१. तत्त्वमसि
३२. साक्षी की खोज
३३. आत्मज्ञान के हीरे मोती
३४. अनमोल वचनामृत
३५. लाख रोगों की एक दवा
३६. हंस गीता
३७. आत्मज्ञान के लिये उपयोगी चित्रावली
३८. अष्टावक्र गीता सार
३९. अष्टाबक्र महागीता
४०. आत्म गीता (भगवद् गीता सार)
४१. शिव गीता
४२. आत्म प्रबोधक संहिता
४३. ज्ञान विना मोक्ष नहीं
४४. विचार ही मार्ग
४५. केवल विस्मृति
४६. परमात्मा की सहज प्राप्ति
४७. सर्वोपनिषद गीता सार
४८. मेरी नहीं उपनिषदों कि तो सुनो

अधिक जानकारी तथा ग्रन्थ प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें :
प्लट नं : 58/60, दिव्य विहार, सामन्तरायपुर, भुवनेश्वर-2 (उड़िशा)
फोन नं : 9437006566, 7873335656, 9937844884
Visit us at : www.niranjanmission.org

पूज्य स्वामीजी के अमृत प्रवचन तथा आत्मज्ञान आधारित भजन का कैसेट एवं सि.डि उपलब्ध है